ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 मार्च 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 18 मार्च 2018 से 24 मार्च 2018

चैत्र शु.– 01 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 59, अंक 11, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. नीलोखेड़ी में हुआ 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, नीलोखेड़ी में युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द जी का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में स्कूल के प्रांगण में 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें नगर के गणमान्य व्यक्ति, अभिभावक व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से यज्ञ व भजनोपदेश में भाग लिया। स्कूल की धर्म शिक्षिका श्रीमती आशा चावला व पुरोहित विकास आर्य ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक 21 कुण्डीय यज्ञ करवाया।

स्कूल के प्राचार्य श्री दीपक मिगलानी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि स्कूल में यज्ञ व भजनोपदेश का आयोजन करवाने का तात्पर्य बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करना है। आज बच्चे अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं, वे पथभ्रष्ट होते जा रहे हैं इसलिए उन्हे सही मार्ग पर लाने के लिए व अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक करने के लिए स्वामी दयानन्द जी की जीवन शैली व उनके विचारों से अवगत करवाना अनिवार्य है। उन्होंने नगर वासियों को भी आश्वासन दिलाया कि वे बच्चों में अच्छे संस्कारों के लिए समय–समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करवाते रहेगें। श्री दीपक मिगलानी ने अपने स्कूल के सभी पदाधिकारियों चेयरमैन श्री राजिंद्रनाथ, वाइस चेयरमैन श्री सत्यपाल आर्य, क्षेत्रीय निदेशक श्री एम.एल. गर्ग, प्रबंधक डॉ. श्रीमती राकेश सन्धू का धन्यवाद किया और कहा कि इनके मार्गदर्शन से ही यह कार्य संभव हो पाया। उन्होंने सभी अभिभावकों का भी इस कार्यक्रम में भाग लेने पर आभार व्यक्त किया।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर - 15ए, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्तुत "झाँकी" को प्रथम पुरस्कार

केन्द्रीय आर्य सभा, चण्डीगढ़, पंचकूला एवं मोहाली द्वारा आयोजित 194वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के शुभावसर पर चण्डीगढ़ नगर में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली, डेराबस्सी, सूरजपुर आदि के आर्य समाज एवं शिक्षण संस्थान महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आधार पर विभिन्न विषयों पर अपनी–अपनी झाँकियों के साथ शोभायात्रा में शामिल हुए। शोभायात्रा का कार्यक्रम अत्यन्त द्रष्टव्य एवं सराहनीय था।

इस शुभावसर पर आर्य युवा समाज, डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर–15ए, चण्डीगढ़ द्वारा "आर्य समाज का प्रयास सम्पूर्ण विश्व का विकास" विषय पर "झाँकी" की प्रस्तुति की गई, जिसे केन्द्रीय आर्य सभा, चण्डीगढ़ ने प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया।

उपर्युक्त विषयानुसार "झाँकी" में मुख्य रूप से यज्ञ, ध्यान, योग, नैतिक शिक्षा, आयुर्वेद एवं आहार इन छः तथ्यों को प्रदर्शित किया गया था। प्रस्तुत "झाँकी" के साथ कक्षा – छठी एवं सातवीं के विद्यार्थीगण वैदिक जयघोष एवं भजन गाते हुए पैदल यात्रा करते रहे। इनके साथ विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा एवं अन्य अध्यापकगण भी इस शोभायात्रा में सम्मिलित हुए।

एम.एल. खन्ना डी. ए. वी. द्वारका में विद्यार्थियों को मातृभूमि की सेवा के लिए तैयार रहने का संदेश दिया गया

एम. एल. खन्ना डी ए वी पब्लिक स्कूल द्वारका में सेवानिवृत्त सैनिकों (वेटरन्स इंडिया) के संग एक आयोजन बड़े ही जोश एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन बाना सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। वीरता का यह सर्वोच्च पुरस्कार उन्हें कारगिल युद्ध में आपरेशन राजीव के दौरान अद्‌भुत वीरता प्रदर्शन के लिए दिया गया था।

इस अवसर पर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की मेयर श्रीमती कमलजीत सहरावत, मेजर जनरल जी. डी. बख्शी, वेटरन्स इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी. के. मिश्रा, वेटरन्स इंडिया दिल्ली राज्य के अध्यक्ष श्री एच.वी. शर्मा वेटरंस इंडिया के सचिव श्री गोपाल सिंह तथा वेटरंस इंडिया के कई अन्य गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ गणमान्य अतिथियों

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 18 मार्च 2018 से 24 मार्च 2018

देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्।
आग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।

अथर्व 19.59.3

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अपि)** क्या **(देवानां)** देवों के **(पन्थां)** मार्ग पर **(आ–अगन्म)** [हम] चलें? [हाँ], **(यत्)** यदि **(तत् अनुप्रवोढुम्)** उस पर स्वयं को चलने में **(शक्नवाम)** समर्थ हों। **(अग्निः)** आत्मा **(विद्वान्)** विद्वान है, **(सः)** वह **(यजात्)** यज्ञ करे, **(सः)** वह **(इत्)** सचमुच **(होता)** होम–निष्पादक है। **(सः)** वही **(अध्वरान्)** यज्ञों को और **(सः)** वही **(ऋतून्)** ऋतुओं को **(कल्पयाति)** रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो, ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं। कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हो देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चला रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम चाहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान्' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग से भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चिंत होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ–निष्पादन में कुशल है, संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देखे कि किस यज्ञ के लिए कौन सी ऋतु, कौन सा समय उपयुक्त है, क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारंभ किया गया या सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने "आत्मिक संसार की कहानी" पर कथा सुनाते हुए कहा यह मोह का जाल है, जिसमें तुमने स्वयं को जकड़ रखा है। इस जाल से बाहर आये बिना तुमसे मानसिक तप नहीं होगा और न ही कल्याण का मार्ग मिलेगा। "मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना" पर कथा सुनाते हुए कहा हम दूसरो को अच्छा बनाना चाहते हैं, स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। "वली देखने को भी इन्साँ नहीं है!" पर कथा सुनाते हुए कहा जिसमें काम की वासना और क्रोध की आग नहीं, जो इन्द्रियों का दास नहीं और क्रोध के वश में होकर अपने लिए और दूसरों के लिए आग की लपटें उभारने का यत्न नहीं करता, उसको मनुष्य कहते हैं। "हमारा विचित्र रोग पर" कथा सुनाते हुए कहा कि दूसरे लोग बनें राम परन्तु स्वयं दशरथ बनना चाहते हैं।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

तेते पाँव पसारिये, जेती लम्बी सौर

अकबर बादशाह बैठे थे राजसभा में। एक कारीगर ने एक बहुत सुन्दर रेशमी चादर लाकर उन्हें दी। बहुत अच्छे और सुन्दर रंगों के फूल उस पर बने थे। महाराज ने चादर खोली, देखा कि उनके शरीर से कुछ छोटी है। तभी उन्हें एक बात सूझी। चादर को उठाकर बोले– "देखो भाई, मैं फ़र्श पर लेटता हूँ। चादर को मेरे ऊपर उढ़ा दो।"

अकबर भूमि पर बिछे कालीन पर लेट गये। कारीगर ने चादर उन पर चढ़ाई तो पाँव नंगे रहे गये। पाँव ढाँपे, तो सिर नंगा रह गया।

महाराज ने कहा– "अरे तुम छोड़ो, तुम केवल अशिक्षित शिल्पी हो। ये बड़े–बड़े विद्वान् दरबारी बैठे हैं। इन्हें यह कार्य करने दो। आओ भाई, कोई इधर आओ, यह चादर इस प्रकार मेरे ऊपर डाल दो कि शरीर का कोई अंग नंगा न रहे।"

एक व्यक्ति बाहर आया। उसने प्रयत्न किया, परन्तु परिणाम वही– सिर ढाँपा तो पाँव नंगे, पाँव ढँके तो सिर पर चादर नहीं। महाराज ने क्रोध से कहा– "मूर्ख हो तुम! हटो यहाँ से, किसी दूसरे को आने दो।"

एक और व्यक्ति आया। उसने भी प्रयत्न किया, परन्तु परिणाम फिर वही। तब एक व्यक्ति और आया, फिर और, फिर और.....

इस प्रकार सब–के–सब दरबारी आये। कोई भी अकबर बादशाह के ऊपर वह चादर इस प्रकार नहीं उढ़ा सका कि सारा शरीर ढँक जाय।

महाराज उठकर बैठ गये; बोले– "तुम सब मूर्ख हो, यह छोटी–सी बात भी नहीं कर सके।"

किसी ने कहा– "महाराज! चादर ही छोटी है, फिर हम क्या करें?"

महाराज बोले– "आने दो बीरबल को, वह इस समस्या का समाधान करेगा।"

तभी पण्डित बीरबल वहाँ आये; बोले– "महाराज! आप किस चिन्ता में है?"

महाराज ने कहा– "बीरबल! यह सब दरबारी तुमसे ईर्ष्या करते हैं। कहते हैं कि हम जो तुम्हें अधिक प्यार करते हैं, तो व्यर्था ही करते हैं; तुम्हारे गुणों के कारण नहीं। आज इन्हें बताओं कि तुममें क्या विशेषता है। यह चादर है। हम चाहते हैं कि इससे हमारा शरीर ढँक जाय, परन्तु ढँकता नहीं।"

बीरबल ने चादर हाथ में लेकर देखा कि वस्तुतः यह छोटी है; बोले– "क्या चाहते हैं आप?"

महाराज ने कालीन पर लेटकर कहा– "इसको हमारे ऊपर इस प्रकार उढ़ा दो कि शरीर का कोई अंग नंगा न रहे।"

बीरबल ने कहा– "यह तो कोई कठिन कार्य नहीं, परन्तु कृपा कर आप ठीक प्रकार से लेटिये।"

अकबर ने कहा– "ठीक किस प्रकार?"

बीरबल ने कहा– "जैसे बच्चा सोता है। घुटने छाती के साथ लगाकर, पैर समेटकर।"

महाराज वैसे ही लेट गए। बीरबल ने चादर उनके ऊपर उढ़ा दी। सारा शरीर ढँक दिया– पाँव भी, सिर भी। बीरबल ने हँसते हुए कहा– "महाराज! जितनी चादर हो, उतने ही पाँव फैलाने चाहियें, फिर ठीक प्रकार से काम बन जाता है।"

तब से यह मुहावरा आरम्भ हुआ कि जितनी चादर हो, उतने पाँव फैलाओ। जितनी आय है, उससे कम खर्च करो। अधिक व्यय करोगे तो काम नहीं चलेगा। तुम्हारा अपना ही खर्च पूरा नहीं होगा तो दूसरे की सहायता तुम क्या करोगे!

मैं यह नहीं कहता कि आप सब लोग उस कंजूस की भाँति बन जाइये, जो घी के डिब्बे को अच्छी प्रकार बाँधकर एक दीवार के साथ लटकाये रखता था और भोजन

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

आर्यसमाज की स्थापना

● भद्रसेन

आर्यसमाज एक धर्मप्रचारक संगठन है। हाँ, आर्यसमाज धार्मिक,शैक्षणिक,सामाजिक क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से कार्य करता है क्योंकि आर्यसमाज की दृष्टि से धर्म केवल यज्ञ–पूजा–पाठ, जप–तप, ध्यान–कीर्तन, व्रत–तीर्थ जैसे धार्मिक कर्मकाण्ड का ही नाम नहीं है। अपितु इसके साथ मुख्य रूप से धर्म= वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन को अच्छा बनाने वाले सत्य, संयम, स्नेह, ईमानदारी आदि गुणों का नाम है। तभी तो कहा है– **'आचारः परमो धर्मः'** मनुस्मृति 1, 108

आर्यसमाज की स्थापना 1875 में महर्षि दयानन्द ने की थी। वे अपने गुरु ब्रह्मर्षि दयानन्द दण्डी द्वारा दी गई प्रेरणा के अनुसार जन–जागरण और जन–हितार्थ आर्षज्ञान की ज्योति को जगमगाना चाहते थे क्योंकि जब स्वामी दयानन्द विदा लेने के लिए गुरुचरणों में पहुंचे, तो गुरु ने स्वामी दयानन्द के जीवन की दिशा बदल कर आर्षज्ञान की ज्योति प्रज्वलित रखने का कार्य सौंपा। इस कार्य को महर्षि दयानन्द ने आगरा से आरम्भ किया। कुछ वर्षों के अनुभव के पश्चात महर्षि ने लक्ष्यसिद्धि की साधना को एक सुनिश्चित रूप दिया। यह सुनिश्चित रूप ही आर्यसमाज के रूप में सामने आया।

इस पर स्वाभाविक प्रश्न उभरता है, कि महर्षि दयानन्द कौन थे? और ऐसे विचित्र गुरु के पास वे कैसे पहुँचे? क्योंकि अधिकतम गुरु अपने शिष्यों से अपनी गुरु गद्दी संभालने की ही बात करते हैं। जबकि ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी जी ने जनता जर्नादन की भलाई के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से आर्षज्ञान की ज्योति जलाने का संकल्प धारण कराया।

जीवनगाथा– स्वामी दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूलशंकर था। 1824 में शिशु मूलशंकर का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में हुआ था। मूलशंकर का 13 वर्ष तक का बालपन दूसरे बालकों की ही तरह बीता। 1838 में शिवव्रत की महिमा सुनकर और पिताजी की प्रेरणा पर *शिवरात्रि का व्रत रखा और जागरण किया।* तब वहां एक ऐतिहासिक घटना घटी। घटनाजन्य विचारों में उलझे मूलशंकर ने अपने पिताजी को जगाकर मन में उभरे प्रश्न पूछे। पिता जी के उत्तरों से मूल के मन को सन्तोष न हुआ, हाँ– यह सुनते ही, कि यह सच्चा शिव नहीं है। कुमार मूल ने मन सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा की। एक दिन नाटक देखते समय बहन की मृत्यु की सूचना मिली। मूल के जीवन में मौत की यह पहली घटना थी, अतः मूल कुछ न समझ सका, वह केवल परिणाम की विहलता को ही देखता रह गया। कुछ वर्ष बाद जब प्रिय चाचा का देहान्त हुआ, तब मूल को पता चला कि मृत्यु अपनों को छीनकर उन की परिचित और छत्रछाया से किस प्रकार वंचित कर देती है

इस प्रकार पहली गांठ के साथ दूसरी मृत्यु का मर्म जानने की जिज्ञासा भी आकर जुड़ गई। इन गांठों की उधेड़बुन में उलझे मूल को उन दिनों जो भी विद्वान, साधु मिला, उसी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी। सभी ने योगाभ्यास से इन की सिद्धि बताई। समीपवर्ती पाठशाला में पढ़ते हुए मूल ने जब अपनी विशेष जिज्ञासायें हल करनी चाहीं और योग सीखने की इच्छा प्रकट की, तो पढ़ाने वाले ने युवक मूल के पिता को सजग कर दिया।

घर में जब विवाह की तैयारियां हो रही थीं, तो एक दिन इक्कीस वर्षीय मूल योग सिखाने वाले गुरू की खोज में घर से निकल गया। इस खोज में मूल से पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर लगातार चौदह वर्ष लगा दिए। तब योग के रूप में जिसने जो सिखाया तथा शास्त्र के नाम पर जो पढ़ाया, सो ग्रहण किया। अन्त में मथुरा पहुंच कर लगभग तीन वर्ष विशेष रूप से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया।

विदा की बेला में गुरु जी ने सच्चे शिवदर्शन तथा मृत्यु विजयार्थ की जाने वाली साधना को परोक्ष में कराकर आर्षज्ञान का दीप जगाने का जीवनोद्देश्य धारण करा दिया। इस ज्ञानदीप को जगाते हुए ऋषि दयानन्द भारत के एक नगर से दूसरे नगर पहुंचे और इस दीप को सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की।

नाम विचार– आर्यसमाज का आर्य शब्द इस संगठन के उद्देश्य, कार्यों, सिद्धांतों, पद्धति को स्पष्ट कर देता है। इसलिए जीवन और समाज में आर्यता लाना अर्थात् अपने तथा दूसरों के जीवन में आर्यपन उभारना ही आर्यसमाज का कर्तव्य है। अतः जहां भी, जो भी, जैसा भी, जितना आर्यत्व है, वह इसके लिए मान्य है। यतोहि– सारे मान्य साहित्य में आर्य शब्द का प्रचुर प्रयोग होता है और सर्वत्र इस का अर्थ गति और श्रेष्ठ, अच्छा, भला ही मिलता है। **'कर्तव्यमाचरन् कम–'** अर्थात करने योग्य को करने वाला ही आर्य कहा जाता है तथा **'अकर्मा दस्यु अभि जो अमन्तु अन्वव्रतो अमानुषः'** ऋग्वेद, 10,22,8 अर्थात जो दस्यु की तरह अकर्मण्य, आलसी, निन्दित कर्मकर्ता और अविचारशील नहीं है– वह आर्य है। क्योंकि दस्यु को आर्यशब्द से विपरीत अर्थ वाला माना जाता है। शास्त्रों के अनेक प्रमाणों से आर्य शब्द का अच्छा अर्थ ही परिपुष्ट होता है।

आर्यपन= अच्छाई ही हर व्यक्ति हर क्षेत्र में चाहता है, अतः आर्यशब्द प्रत्येक की अभीष्ट चाहना का बोधक है। इसीलिए जो भी, जहाँ भी, जब आर्यशब्द का प्रयोग करना चाहे प्रयोग कर सकता है। काल, देश, वर्ग की सीमा इसमें बाधक नहीं बनती। अर्थात आर्य शब्द सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक भावनाओं का वाचक है।

इस विवेचना से स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि आर्यशब्द किसी प्रदेश, वर्ग, भाषा तथा काल की सीमा से सीमित नहीं है। अतः हर काल, देश, भाषा की आर्यता, सत्यता, तत्सम्बद्ध शास्त्रवचन यहां स्वीकार्य है। इसीलिए आर्यसमाज का चतुर्थ नियम है– 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य से छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' हां, इस नियम का तृतीय के साथ संगतिकरण करने से सत्य–वेद का भी संकेत करता है तथा सत्य स्वतंत्र रूप से भी ग्राह्य है। जैसे अपने मान्य ग्रन्थ की सचाई हमें स्वीकार्य है, ऐसे ही सभी को वेद की सचाई भी स्वीकार्य होनी चाहिए।

इस दृष्टिकोण से निम्न विवेचन विशेष विचार्य हैं, क्योंकि उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी में अनेक धर्मप्रचारक संगठन सामने आए। वे अपने–अपने शास्त्रों के विचारों की सचाई तक ही सीमित होकर चल रहे हैं, पर वे वेद की स्पष्ट सत्य प्रतीत होने वाली बातों को भी अपने यहां उद्धरण रूप में नहीं लेते और प्रमाणरूप में प्रस्तुत नहीं करते हैं। आर्यसमाज का उनसे एक स्पष्ट अन्तर यह भी है, कि आर्यसमाज प्राचीनतम वेद आदि शास्त्रों के साथ औरों की सचाई को भी उदधृत करता है तथा प्रामाणिक मानता है। प्राचीनतम होने से वेदादि को नकारता नहीं है और न ही अन्यों की सचाई को लेने से हिचकता है। अतः जो भी सत्य है, उस को बिना पक्षपात के सहर्ष स्वीकार करता है।

सचाई को प्रमुखता देने के कारण आर्यसमाज व्यक्ति को प्रमुखता न देकर सत्य सिद्धांतों, विचारों और किसी को उसके कार्यों के सत्यानुरूप ही महत्त्व देता है अर्थात व्यक्तित्व, कृतित्व के आधार पर प्रतिष्ठा देता है। संगठन को व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं करता, क्योंकि जैसे कोई व्यक्ति शारीरिक, मानसिक दृष्टि से सीमित होता है। अतः उसका बल, ज्ञान, कार्य भी सीमित होते हैं। संगठन में किसी (किन्हीं) व्यक्ति विशेष को महत्त्व देने से अन्यों की अपेक्षा हो जाती है। यह स्पष्ट पक्षपात है। पक्षपात के कारण अनुयायी व्यक्ति विशेष से बन्ध जाने के कारण उसी के विचारों तक रूढ़ हो जाते हैं तथा हठधर्मी बन जाते हैं। स्थिति यहां तक पहुंच जाती है, कि उन विचारों की तुलनात्मक समीक्षा और दूसरों के सम्बन्ध में सोचने के लिए तैयार नहीं होते। जैसेकि व्यक्तिवादी संस्थाओं में देखते हैं, वे अपने अगुवा से ही हर बात को शुरू करते हैं। उसी के आधार पर ही प्रत्येक कार्य, बात की चर्चा तथा जांच करते हैं। उस व्यक्ति विशेष से पूर्ववर्ती इतिहास, साहित्य पर ध्यान ही नहीं देते हैं।

आर्यसमाज के लक्ष्य, विचारों, प्रक्रिया का बोधक आर्य शब्द जहां व्यक्ति तथा समाज की हर भलाई, विकास का संकेत करता है, वहां इस के साथ सम्पृक्त समाज का शब्द यह भाव देता है, कि समझदारों के समूह, संगठन का नाम ही समाज है और समझदारों का संगठन सदा ही सूर्य आदि की तरह नियमों के अनुसार ही अपना प्रत्येक कार्य करता है। किसी संगठन के नियमबद्ध सदस्य सदा सामाजिक कार्यों में संगठन को ही प्रमुखता देते हैं। इसीलिए आर्यसमाज के दशम नियम में कहा है– 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहे।'

संगठन प्रक्रिया– आर्य समाज की कार्य प्रणाली लोकतन्त्रात्मक है। स्थानीय सदस्य अपने में से अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं, जो कि संगठन की स्थानीय व्यवस्था चलाते हैं। स्थानीय आर्यसमाजों के प्रतिनिधि ही प्रान्तीय स्तर पर अपनों में से प्रान्तीय अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं। वे निर्वाचित अधिकारी प्रान्तीय स्तर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से प्रान्तीय संगठन के कार्य को चलाते हैं। विभिन्न–विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि आगे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए अधिकारियों का निर्वाचन करते हैं। वे अधिकारी सार्वदेशिक स्तर पर व्यवस्था चलाते हैं।

इस प्रकार तीन स्तरों पर निर्वाचित सदस्य संगठन की व्यवस्था और प्रचार के कार्य करते हैं। इस प्रकार आर्यसमाज धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करने वाला संगठन है। हां, अनेक शिक्षणालय, औषधालय और हस्तकला केन्द्र चलाए जा रहे हैं, वही बाढ, भूकम्प आदि प्राकृतिक विपदाओं के समय आर्य समाज पीड़ितों की सहायता करता है।

विचारों का प्रचार और सामाजिक सुधार सदा स्थानीय स्तर पर ही होता है। अतः स्थानीय कार्यकर्ता तथा रूचि रखने वाले अधिक सहायक होते हैं। संदेश संचार के चाहे आज कितने ही माध्यम हैं, पर व्यक्तिगत सम्पर्क नई सोच उभारने में अधिक सार्थक होता है।

182– शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

शास्त्रज्ञ विद्वान 'मन' का अर्थ समझते हैं पर सामान्य जन के लिए यह शब्द दुर्बोध्य है। फिर मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की बात आती है तो कठिनाई और बढ़ जाती है। विद्वान लोग जिस सहजता से मन की चर्चा प्रवचनों में करते हैं, उससे तो लगता है कि प्रवचन समझ में आ रहा है लेकिन घर पहुँचते ही सब कुछ गड्ड-मड्ड हो जाता है। व्यक्ति कन्फ्यूज्ड-दिग्भ्रमित हो जाता है। मेरे साथ भी यही हुआ। अनेक बार इस शब्द को पकड़ा। अर्थ समझने का प्रयास किया पर पूर्णतया ठीक-ठीक समझ में न आने के कारण छोड़ना पड़ा।

ग्वालियर में प्रारम्भ किए गए आधे-अधूरे लेखों को पूरा करने व्यवस्थित करने सजाने-सँवारने में पूरा अगस्त बीत गया। सोचा कुछ विश्राम लिया जाए। हलका-फुलका अध्ययन चलता रहेगा। लेकिन ऐसा होता कहाँ है, विचारतंत्री जिस ओर झुकी हुई होती है, मन भी उसी तरफ डोलता रहता है। ध्यान केन्द्रित किया 'शिवसंकल्प मंत्रों' पर विचार करने का।

अत्यधिक कठिन काम है मन को डील (deal) करना। 'मन' नाम की कोई वस्तु/चीज है भी कि नहीं, यदि है तो यह भौतिक है या अभौतिक। भौतिक है तो शरीर का कौन सा अंग है। और अभौतिक है तो शरीर के किस भाग में स्थित है। मस्तिष्क में या हृदय में। फिर यह कार्य कैसे करता है। इस विषय में विज्ञान क्या कहता है और शास्त्र क्या कहते हैं देखना होगा।

प्रभु ने मार्ग दिखाया। दो महानुभावों से टेलीफोन पर बात करने का अवसर प्राप्त हो गया। आर्यसमाज, नयाबाजार, लश्कर, ग्वालियर के भूतपूर्व प्रधान, नेत्रविशेषज्ञ एस.टी आनन्द मोहन सक्सेना और वेदमर्मज्ञ, वेदों का काव्यानुवाद-रूपान्तरण करने वाले पं. देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि' अलीगढ़।

डा. सक्सेना ने बताया कि एलौपेथी शरीर विज्ञान में 'मन' का अस्तित्व नहीं है। अंग्रेजी भाषा में मन का समतुल्य शब्द नहीं है। माइन्ड और ब्रेन पावर की बात है। पं. भारद्वाज जी ने यही बात कहते हुए स्पष्ट किया कि अंग्रेजी भाषा में वैदिक साहित्य का नितान्त अभाव है। इसीलिए मन की चर्चा भी उपलब्ध नहीं है। दोनों ही विद्वानों से चर्चा में मन की अपनी परिकल्पना के निकट पहुँच गया। मन माने ब्रेन पावर। मानव-खोपड़ी में मस्तिष्क एक स्थूल आकार का अंग है। हृदय का काम रक्त को पम्प कर, फैफड़ों में शुद्धि के लिए पहुँचाना होता है। मस्तिष्क की शक्ति को ऊर्जा को ब्रेन पावर या मन कहा जा सकता है। निश्चय हुआ कि मानव मन का स्थान मस्तिष्क है।

मस्तिष्क की संरचना में ही एक खरब यानि 100 करोड़ न्यूरोन सैल्स हैं। समस्त शरीर करोड़ों नहीं, अरबों-खरबों (billions of nerve cells) नस-नाड़ियों के जाल से आवृत्त है। इसीलिए मस्तिष्क, क्षण से भी, कम समय में, संवेग को यथास्थान पहुँचा देता है। यह मस्तिष्क ही समस्त ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की संचालक शक्ति है। इसीलिए मृत शरीर में जब तक मस्तिष्क सक्रिय रहता है, तब तक डाक्टर व्यक्ति को मृत घोषित नहीं करते। नेत्रों की पुतलियाँ स्थिर हो जाने से उन्हें पता चलता है कि मस्तिष्क ने काम करना बन्द कर दिया है।

ज्ञानेन्द्रियों का संचालक मस्तिष्क है, इसका मुझे व्यक्तिगत अनुभव है। मेरे साईनस के आपरेशन में, नाक की वह अतिसूक्ष्म नस भी कट गई जो गंध वाहक है। अब मुझे अव्यधिक तीव्र गंध का ही, थोड़ा-बहुत अनुभव हो पाता है।

विज्ञान की पहुँच यहीं तक है। वह इस बात की व्याख्या नहीं करता कि मस्तिष्क शरीर का एक हिस्सा-अंग होने से, स्थूल ही है। जड़-प्रकृति तत्त्वों से यह शरीर निर्मित हुआ है। जड़ मस्तिष्क में चेतन शक्ति कहाँ से, कैसे आई?

वेद के पास, इसका तार्किक समाधान है। मन पर विचार करने से पूर्व, आत्मा, जीवात्मा और परमात्मा विषयक जानकारी का पुनरवलोकन या अवलोकन आवश्यक है। परमात्मा और आत्मा दोनों अनादि सत्ताएँ हैं। प्रकृति भी अनादि है परन्तु उसकी चर्चा विषय की आवश्यकता न होने के कारण अभी नहीं कर रहा हूँ।

अनादि माने जिसका आदि-प्रारम्भ न हो। जो अनादि है उसका अन्त भी नहीं होता। ये दोनों सत्ताएँ इसीलिए नित्य कही जाती हैं। ये पृथक रूप में स्वतंत्र सत्ताएँ हैं। लेकिन आत्मा को मानव का चोला-शरीर, परमात्मा प्रदान करता है। इन दोनों सत्ताओं की पृथकता को अत्यन्त स्पष्ट रूप में 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया' मन्त्र में दर्शाया गया है।

आत्मा सूक्ष्म तत्त्व है कितना सूक्ष्म? श्वेताश्वर उपनिषद अध्याय एक श्लोक 10 में बताया गया है-

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।

भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते।।

(बालः) बाल के (अग्र) (अग्र भाग के (खड़े बाले के) (शतभागस्य) सौवें भाग का (शतधा) सौवा भाग (कल्पितस्य) किए हुए का (च) और (भागः) एक हिस्सा (जीवः) जीवात्मा (विज्ञेयः) जानना चाहिए (सः च) और वही सूक्ष्माति सूक्ष्म (अनन्ताय) अनन्त कर्म व शक्ति के लिए (कल्पते) समर्थ है। एक शरीर में एक जीवात्मा होने से जीवात्मा अनेक। समस्त प्राणियों में एक ही परमात्मा होने से परमात्मा एक ही है-दो या अधिक नहीं। अथर्ववेद का सूक्त-मंत्र समूह द्रष्टव्य है-

यत एतं देवमेकवृतं वेद 13.4.15

न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते 13.4.16

न पञ्चमो, न षष्ठ न सप्तमो नाप्युच्यते 13.4.17

न अष्टमो न नवमो, दशमो नाप्युच्यते 13.4.18

वह परमात्मा एक ही है। दो, तीन, चार, पाँच, छैः, सात, आठ, नौ, और दस नहीं।

वेद में जीवात्मा को हृतप्रतिष्ठं हृदय (दिल-हार्ट) में स्थित बताया गया है। आमाशय (पेट) के ऊपर, दोनों पसलियों के संगम स्थल पर 'हृदय गुफा' में, मन के साथ, जीवात्मा प्रतिष्ठित है। शरीरोपरान्त जीवात्मा के साथ सूक्ष्म शरीर जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियां श्रोत्र (कान) नेत्र, जिह्वा, नाक, त्वचा और पाँच कर्मेन्द्रियाँ, हाथ, पैर, मुख, गुदा, उपस्थ। योनि व पाँच तन्मात्राएँ-शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श 15 और मन एवं बुद्धि सत्रह (17) तत्त्व साथ जाते हैं।

मन जाता है तो उसके साथ ही जन्म-जन्मान्तर का उपार्जित ज्ञान व गत जीवन में भोगने से बचे शेष संचित कर्म भी साथ जाते हैं।

देखिए ईश्वरीय व्यवस्था का कमाल, अनूठापन मृत्यु के पूर्व पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का अर्जित ज्ञान सिमट कर मन में समा जाता है। इसका प्रमाण कम आयु के अनेक बालक-बालिका अपनी अद्वितीय पूर्व जन्मों में अर्जित 'धारणा' स्मृति, बुद्धि से प्रदर्शित कर चुके हैं। इसी से यह अवधारणा बलवती हुई है कि विद्यासम्पन्न माता-पिता की सन्तान उन बच्चों से तुलनात्मक रूप में अधिक मेधावी होती है जो अशिक्षित या अर्धशिक्षित माता-पिता के होते हैं अपवादों की चर्चा छोड़िए।

व्याख्या/मन की एक अद्भुत स्थिति का प्रमाण समाधि योग सिद्धपुरुषों/संन्यासियों के पास था/ है। मन अभौतिक तत्त्व है आत्मस्थित मन/आत्मा, हृदय की गुह्य गुफा से निकाल शरीर के अन्य भाग में स्थित की जा सकती है और पुनः यथास्थान अवस्थित की जा सकती है। मस्तिष्क को ही केन्द्र मानकर सभी इन्द्रियों के संचालक के रूप में मानने वाले विज्ञान के पास यह अद्भुत शक्ति उपलब्ध नहीं है।

महर्षि दयानन्द से, जिनके लिए योगीराज अरविन्द का कथन है कि वे समकालीन योगियों में सागरमाथा (माउन्ट एवरेस्ट) की सर्वोच्च चोटी पर आसीन हैं-एक व्यक्ति ने कहा-यह सर्वज्ञान तथ्य है कि आदि शंकराचार्य परकाया प्रवेश कर सकते थे। महर्षि की विनम्रता तो देखिए। महर्षि ने उत्तर दिया कि वह मध्यम श्रेणी के साधक हैं। अपनी आत्मा को, शरीर के किसी भी स्थान पर केन्द्रित कर सकते हैं, शेष शरीर मृतवत हो जाएगा।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति महोदय स्वर्गीय डा. राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी अपना आपरेशन बिना एनीस्थिया लिए कराया था। स्वयं कुछ पढ़ते रहे।

उपरोक्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्टतया प्रमाणित होता है कि वेद की अवधारणा -ज्ञानेन्द्रियों का संचालन अर्जित-पूर्व जन्मों का भी और वर्तमान जन्म में अर्जित ज्ञान का भण्डारण आत्मास्थित मन करता है। मस्तिष्क मन के निर्देशों का पालन करता है।

जीवात्मा अपनी जन्म-जन्मान्तर की वृत्ति के अनुकूल मन को विभिन्न कार्य सम्पन्न करने के लिए आदेश/निर्देश देता है। यदि आदेश अनुचित है तो विवेक-बुद्धि परमात्मा से चेतावनी दिलवाता है और अनुकूल है तो शाबासी देता है, उत्साहवर्धन करता है। इस तरह परमात्मा, जीवात्मा की कन्ट्रोलिंग पावर है, संचालक शक्ति है। परमात्मा जीवात्मा की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होता है। इतना स्पष्ट हो जाने पर, शिवसंकल्प मन्त्रों का चिन्तन मनन व

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

ठूँठ के ठाट और बन्दर बाँट

● देव नारायण भारद्वाज

एक ग्राम था, जिसके उत्तर में रामगंगा नदी बहती थी, ग्रीष्म ऋतु में उसकी धार क्षीण हो जाती थी, सभी लोग उसे पैदल पार कर लेते थे, अन्य ऋतुओं में उसे नौका द्वारा पार किया जाता था। वर्षा ऋतु में उसका रूप बड़ा भयंकर होता जाता था, लगता था मानों वह समुद्र बन गई हो। दूर–दूर तक जल ही जल होता था, दूसरा किनारा दिखाई ही नहीं देता था। किनारे की भूमि कटती रहती थी, और गिरती हुई किनारों की मिट्टी की धड़ाम–धड़ाम की ध्वनियाँ इतनी भयंकर हो जाती थी, कि सुनकर रात्रि में सोते हुए लोग भी डर जाते थे। वर्षानुवर्ष इस कटान के कारण कई ग्राम लुप्त हो जाते थे, जिसके निवासी पीछे हटकर अपनी नई बस्ती बसा लेते थे। इतने पर भी एक ग्राम ऐसा था, जिस पर बाढ़ का प्रकोप, बस इतना ही होता था कि ग्राम में पानी घुसता था, कुछ दिन टिकता था फिर वापस हो जाता था।

ग्राम के उत्तर में जो बाग था, वह कटकर एक बड़े बंजर भूमि के मैदान में बदल गया था। एक वृक्ष का ठूँठ वहाँ पर खड़ा–खड़ा अपने बाग की बुलन्दी की याद दिलाता रहता था। बच्चे जो यहाँ खेलने आते थे, वे उसपर चढ़ते उतरते दौड़ते हुए खेल खेलते रहते थे। एक दिन वहाँ पर बूढ़ी गाय आई और ठूँठ से रगड़ कर अपने शरीर की खुजली मिटाने लगी। वृक्ष के इस ठूँठ से निकली लकड़ी की नोक ने गाय के शरीर में धाव कर दिया और कुछ ही दिनों बाद गाय की मृत्यु हो गई। बूढ़ी गाय को तो मरना ही था किंतु उसके मरने का बहाना वृक्ष का वह ठूँठ बन गया। ग्राम के क्षत्रिय, जमींदार समझदार जागरूक थे। वे संस्कार–जागरण के लिए ब्राह्मणों के योग्य पुत्रों को काशी भेजकर संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था करते थे। जब–जब ये बालक ग्राम में अवकाश पर लौटते थे, तब जमींदार लोग उनकी वार्ता सुनकर आनन्दित होते थे। मैदान में खड़े उस ठूँठ को देखकर दार्शनिक ग्रन्थ कादम्बरी के रचयिता महाकवि वाणभट्ट के पुत्रों के वाक्य अवश्य दोहराए जाते थे, जो किसी सूखे वृक्ष ठूँठ से ही जुड़े होते थे। एक का अनुवाद था–'शुष्कोवृक्षः तिष्ठति अग्रे,' तो दूसरे ने किया 'नीरस तरूरिह विलसतिपुरतः' दूसरे के अनुवाद को श्रेष्ठ मानकर पिता वाणभट्ट ने अपने अधूरे काव्य को पूर्ण करने का अधिकार प्रदान कर दिया था। दोनों ब्राह्मण किशोर, अन्य श्लोक सुनाकर भी ग्रामवासियों को सुख पहुँचाते रहते थे। यहाँ पर चूँकि वृक्ष के ठूँठ का प्रसंग है, अस्तु यहाँ तक सीमित रखा गया है।

ग्राम के बाल–युवा–वृद्धजनों को उस दिन बड़ा आश्चर्य हुआ कि बाप–दादों की पीढ़ियों से खड़ा वह ठूँठ हरा होने लगा, और कुछ ही महीनों में वह हरा भरा वृक्ष बन गया। वर्ष व्यतीत होते–होते ऊँचा उठकर वह वृक्ष आसमान से बातें करने लगा। ग्रामवासी इस वृक्ष से छाया के साथ फलों की आस लगाए रहते थे। उनकी यह आशा एक प्रभात में निराशा में बदल गई थी, जब उन्होंने देखा कि रात्रि में आयी आँधी से वह वृक्ष जड़–मूल से उखड़ कर मैदान में लोट–पोट हो रहा है। वृक्ष के धाराशायी होने पर शायद ही किसी को दुःख हुआ हो, क्योंकि उस वृक्ष के तना–टहनी–पत्ते सभी उनके काम में आ गए, और वहाँ बच रहा केवल एक गहरा गड्ढा, जिसकी मिट्टी भी खोद–खोद कर ग्रामवासी अपने काम में लाने लगे थे। काशी से अपनी शिक्षा पूर्ण कर ग्राम के ब्राह्मण अब युवा पण्डित बनकर घर लौट आए और पूजा–पाठ–कथा–वार्ता के द्वारा परिवारों में संस्कार जागरण का कार्य करने लगे। उन्होंने ठूँठ से बने वृक्ष के आँधी से विनष्ट होने के कारण बने गड्ढे को देखकर एक वेद मंत्र सुनायाः–

असद् भूम्याः समभवत् तद्यामेति महद् व्यचः।
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक कर्त्तारमृच्छतु।।

(अथर्व 4.19.6)

अन्याय असद् सब पाप कृत्य, उठता है भूमि तला तल से।
आकाश तलक उठ जाता है, पाकर हरियाली छल बल से,
वह लौट भूमि पर फिर आता, कर्ता को विनष्ट कर जाता,
यहाँ न कोई बच सकता है, कृत कर्म–पाप फल चंगुल से।।

उन्होंने समझाया कि फलता–फूलता राष्ट्र राजा–प्रजा के पारस्परिक अन्याय–अत्याचार, दुराचार–दुष्कर्म के प्राबल्य से सूखकर ठूँठ मात्र रह जाता है, और जहाँ गौ माता की रक्षा न होकर उसका रुधिर बहता है, तो उसकी संस्कृति जड़–मूल से नष्ट होकर कवि की इन पंक्तियों को चरितार्थ करने लगती हैः–

अन्धकार है वहीं जहाँ आदित्य नहीं है।
मृत वत है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।
जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
वह ह्रदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

उस ठूँठ को गोहत्या का ऐसा अभिशाप लगा, कि वह पहले तो फूलता–फलता ठाठें मारता दिखाई दिया, किंतु बाद में अस्तित्व हीन हो गया। उपस्थित ग्रमवासियों ने उन शास्त्रज्ञ युवकों से इस परिस्थिति को दूर करने का उपाय जानना चाहा तो उन्हें महाभारत ग्रंथ के अनुशासन पर्व से एक कहानी सुनाकर संतुष्ट कर दिया। एक था तोता, जो वियाबान जंगल के एक वृक्ष की खोह में रहता था। उसके हरे पंख, लाल चोंच, गर्दन में सुनहरी कंठी और लालिमा लिए पंजे मनोहरी लगते थे। उसकी मीठी बोली सुनकर सब पक्षी ठगे से रह जाते थे। इस पेड़ पर और भी अनेक प्रजातियों के पक्षी रहते थे। प्रभात होते ही सभी पक्षी चहचहाकर अपना कलरव गान सुनाते हुए दूर दिशाओं में उड़ जाते, और दाना–पानी का प्रबंध करते। लौटकर इसी पेड़ पर आकर बसेरा करते। पेड़ इतना विशाल था कि यात्री ग्वाले, हिरण आदि इसके नीचे बैठकर विश्राम करते। एक शिकारी हिरण के शिकार की नियत से इधर आ निकला। उसने हिरण को मारने के लिए विष बुझा तीर छोड़ा, हिरण भाग गया, किंतु तीर पेड़ पर जाकर लग गया। शिकारी तो निराश होकर लौट गया, किंतु पेड़ विष के मारक प्रभाव से सूखने लगा। कुछ ही दिनों में पेड़ सूखकर ठंकर बन गया। सब पक्षी किनारा कर गए। पर तोता कहीं नहीं गया। उसी खोह में बैठा रहा। पेड़ की दुर्दशा देखकर तोते की आँखों में आँसू आ जाते। तोता इतना खिन्न रहने लगा कि वह अपना चुग्गा लेने के लिए भी कहीं बाहर नहीं जाता।

होना क्या था पेड़ की भाँति तोता भी सूखता चला गया। उसका मांसल सुन्दर शरीर हड्डियों का ढाँचा बनकर रह गया। किसी को क्या पड़ी थी, कि यहाँ आकर उसकी दयनीय दशा को देखे। पर उसकी त्याग, तपस्या की सुधि देवराज इन्द्र को लग गई। उन्हें आभास हुआ कि दृढ़ व्रती तोता अपने जन्मवृक्ष का इतना भक्त है कि वह अपने प्राणों की आहुति देने को उद्यत है। इन्द्र विचलित हो गए। देवता न तो आंखों के मोहताज होते हैं न कानों के, वे तो भावना की सुगन्धि दूर से ही ले लेते हैं। इन्द्र से रहा नहीं गया। वे ब्राह्मण का रूप धारण कर तोते के पास आ गए। तपस्या के कारण उसकी चेतना तीव्र एवं मानवीय बन गई थी। उसने देवराज को पहचान लिया। उन्हें प्रणाम किया और अपनी दुर्बल किंतु नम्रवाणी से उनका स्वागत किया।

इन्द्र ने तोते को बहुत समझाया कि वह एक सूखे पेड़ के लिए अपने प्राण न गवाएँ। पर तोता अपने संकल्प से टस से मस न हुआ। उसने इन्द्र से कहा यह पेड़ मेरा जन्मतरु ही नहीं, सब कुछ है। मैं इसी पर जन्मा, पला, बड़ा हुआ और आज तक की अवस्था तक पहुँचा हूँ। इसके हरे–हरे पत्तों की सुखद छाया में मैंने इपनी थकान मिटाई व विश्राम पाया। इसके फूलों की सुगन्ध से मेरी आत्मा तृप्त हुई है। इसके फल खाकर मेरा शरीर पोषित हुआ है। माँ–बाप ने तो मुझे जन्म ही दिया था। पाला–पोसा तो इसी ने। इसके उपकारों को भला में कैसे भूल सकता हूँ। आप राजाओं के राजा होकर कैसे यह अनीति की बात कहते हैं। मुझे इसी के साथ मर जाने दो, देवराज।

इन्द्र तोते की दृढ़भक्ति एवं अडिग संकल्प को देखकर चकित रह गए और बोले–पक्षिवर मैं तुम्हारी जन्मतक के प्रति इस अचल भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। वर माग लो, जो माँगोगे दूँगा। ऐसा जन्म स्थलप्रेम यदि सबके मन में आ जाए, तो जीवन की कोई समस्या व भेदभाव ही न रहे। माँगो क्या माँगते हो। तोता बोला–देवराज! यदि देना चाहते हो तो यह वरदान दो–मेरा जन्मतरु फिर हरा–भरा हो जाए। पूर्ववत हरे–हरे पत्ते, पीले–पीले फूल और रसभरे फल फिर से आ जाएँ। इन्द्र को तथास्तु कहना पड़ा। पेड़ फिर पहले जैसा हो गया। पक्षियों के मेले लगने लगे। हिरणों के झुण्ड सजने लगे, और ग्वाल–बालों का क्रीड़ा स्थल फिर से हँसने लगा। यही नहीं, तोता भी फिर पहले जैसा ह्रष्ट–पुष्ट मांसल और प्रसन्न मन हो गया। राष्ट्र प्रजा का वंशवृक्ष होता है।

ग्राम के उन वेद विद्वान युवकों ने ग्रामवासियों को प्रथम कथानक में युगों–युगों से खड़े ठूँठ का गोवध के शाप से पहले बढ़ने फिर समूल नष्ट–भ्रष्ट होने की बात बताई। दूसरे कथानक में आतंकी शिकारियों द्वारा विखण्डित कर दिए गए। राष्ट्र को त्याग तपस्वी मातृभक्त नागरिकों के बलिदान से पुनर्प्रतिष्ठित कर दिए जाने का संदेश है। इन्द्र राष्ट्र नायक के रूप में अपने नागरिकों का आदर्श प्रेरणा स्रोत होता है। ईश्वर भी **'इन्द्रस्यः युज्यः सखा'** (ऋ. 1.22.19) अनेक ऐश्वर्य युक्त होने योग्य प्रजा का समर्थ सखा बन जाता है। ऐसी उज्ज्वल स्थिति होने पर वाममार्गी व विरोधी शान्त रहते हैं, अन्यथा वहाँ हर विभाग व उपक्रम में बन्दर–बाँट प्रारंभ हो जाता है। यह कथा तो बच्चे भी जानते हैं। एक रोटी के लिए दो बिल्लयाँ लड़ पड़ीं। बन्दर महोदय ने देखा तो बँटवारा करने आ गए। रोटी के दो टुकड़े किए और तराजू के दोनों पलडों में रख दिए। ऊँचे–नीचे पलडों का सन्तुलन बनाने के बहाने शनैः शनैः पूरी रोटी स्वयं खा गया। त्यागी तपस्वी शासक वर्ग ऐसे बन्दरों को पकड़ते हैं वे कारागार जाते–जाते बन्दर घुड़की लगाने में चूकते नहीं, पर तोते पेड़ पर फुदकते और माफिया जेल के पिंजरों में तड़पते रह जाते हैं।

'वरेण्यम्' एम.आई.जी.–45 (पी) रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ (उ.प्र.)

वन्दे मातरम् का मुस्लिम आचरण

● रूचचन्द्र दीपक

'वन्दे मातरम्' कविता की रचना बंकिम चन्द्र चटर्जी ने वर्ष 1876 में की थी। तत्पश्चात् उन्होंने 'आनन्दमठ' नामक उपन्यास लिखा जो वर्ष 1882 में प्रकाशित हुआ। लेखक ने 'वन्दे मातरम्' कविता को भी उपन्यास में सम्मिलित किया। यह कविता लगभग 100 शब्दों की है जिसका चौथाई अंश स्वाधीन भारत के राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत है।

आनन्दमठ की वर्तमान प्रस्तावना के अनुसार 'बंकिम ने 'वन्दे मातरम्' में भारत माँ को एक देवी माँ के रूप में दर्शाकर अपनी कल्पना को साकार रूप दिया।'' परंतु आनन्दमठ का प्रमुख पात्र सत्यानन्द पृष्ठ–117 पर कहता है–''मैंने केवल मातृभूमि को माँ कहा है, अन्य किसी को नहीं। इस धरती के सिवा हमारी कोई माँ नहीं है।'' इससे यह स्पष्ट है कि 'वन्दे मातरम्' में 'मातरम्' का अर्थ है–भारत माता।

'वन्दे मातरम्' ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में सेनानियों को प्रचण्ड देशभक्ति की प्रेरणा दी थी। अपनी लगभग डेढ़ शती की आयु में इसने अनुपम निष्ठा, ख्याति तथा उच्चता अर्जित की है। आज भी इसका उद्घोष राष्ट्र–संगठन और आत्म–बलिदान की ऊर्जा का संचार करता है। परंतु कुछ अल्पसंख्यक वर्गों को राष्ट्रगीत के शब्दों पर आपत्ति है। इस आपत्ति का 75 प्रतिशत निराकरण करना इस लेख का प्रयोजन है।

'ओ३म्' शब्द का अर्थ है–'ईश्वर रक्षक है'। 'खुदा हाफिज' शब्द का अर्थ है–'ईश्वर रक्षक है'। दोनों शब्दों के वक्ताओं का आशय समान है किंतु शब्द भिन्न हैं और वे एक–दूसरे के शब्द नहीं बोलते हैं। 'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम' में ईश्वर को महानतम कहा गया है। 'अल्लाहो अकबर' में भी ईश्वर को महानतम कहा गया है। दोनों वक्ताओं का भाव एक–समान है किंतु वे एक–दूसरे के शब्द स्वीकार नहीं करते। वैदिक–सन्ध्या और इस्लामी नमाज में सुख–शांति की प्रार्थना समान है किंतु दोनों उपासक अपने ही शब्दों से उपासना करते हैं, दूसरे के शब्दों से नहीं। तात्पर्य यह है कि दोनों वर्गों के भाव समान हो सकते हैं किंतु शब्द भिन्न ही रहेंगे।

भारतवर्ष में ऐसे सहस्रों व्यक्ति हैं जो पहले वैदिक हिन्दू थे; मंत्रों एवं श्लोकों से ईश–प्रार्थना करते थे; किंतु बाद में मुसलमान हो गये और संस्कृत के शब्द छोड़कर अरबी भाषा में ईश–प्रार्थना करने लगे। ऐसे ही सहस्रों व्यक्ति हैं जो पहले मुसलमान थे; अरबी भाषा में ईश–प्रार्थना करते थे; किंतु बाद में वैदिक हिन्दू हो गये और अरबी के शब्द छोड़कर संस्कृत भाषा में ईश–प्रार्थना करने लगे। इस प्रकार समुदाय बदलने से शब्द बदल जाते हैं; अर्थात् शब्द सर्वथा अपरिवर्तनीय नहीं हैं।

'वन्दे' शब्द संस्कृत की 'वदि अभिवादनस्तुत्योः' धातु से बना है जिसके अर्थ हैं–अभिवादन करना और स्तुति करना। अभिवादन अर्थात् आदर, सम्मान और प्रणाम करना। स्तुति अर्थात् प्रशंसा करना, कीर्ति गाना और गुणगान करना। इस प्रकार 'वन्दे मातरम्' उद्घोष के अर्थ निम्नवत् बनते हैं–

1. मैं भारत माता का सम्मान करता हूँ;

2. भारत माता का सम्मान संसार में शीर्षस्थ रहे;

3. हम भारत माता को प्रणाम करते हैं;

4. मैं भारत माता को तन–मन–धन से ऊपर रखूँगा;

5. आओ, भारत माता का गुणगान करें;

6. भारत माता का कोई तिरस्कार न करने पाए;

7. भारत माता के सपूतों! हम सब एक हैं;

8. भारत माता की एक–एक इंच भूमि सुरक्षित रहे;

9. सम्पूर्ण संसार भारत माता की प्रशंसा स्वीकार करे;

10. आओ, भारत माता पर प्राण न्योछावर कर दें; इत्यादि।

वर्तमान युग में वैदिक धर्म का प्रतिनिधि आर्य समाज है। आर्य समाज और मुस्लिम समाज की उपासना पद्धतियाँ भिन्न है; किंतु दोनों एक और निराकार ईश्वर की उपसना करते हैं। चित्र या मूर्ति की पूजा नहीं करते और ईश्वर के अतिरिक्त किसी की उपसना नहीं करते। 'बन्दे मातरम्' का अर्थ यदि देवी माँ की उपासना करना होता तो मुस्लिम समाज ही नहीं, आर्य समाज को भी स्वीकार नहीं होता। वैदिक धर्म के अनुसार माता–पिता, आचार्य, अतिथि, राजा, भारतमाता और ईश्वर ये सब पूजनीय हैं; किंतु 'पूजा' के अर्थ भिन्न–भिन्न है। अन्यों की पूजा का अर्थ है–इनका आदर, सत्कार, सेवा, आदेशपालन, रक्षा, प्राणदान आदि करना। केवल ईश्वर की पूजा का अर्थ उसकी उपासना करना है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना नहीं हो सकती; न ही करनी चाहिए।

एक मुस्लिम व्यक्ति का प्रकाशित बयान है–''वन्दे मातरम् का मतलब यदि देश पर जान देना है तो मैं व मेरा परिवार, सभी मुसलमान देश पर कुर्बान होने को तैयार हैं। वन्देमातरम् का मतलब अगर भारत को सलाम है तो सभी मुसलमान सलाम करेंगे। वन्देमातरम् का अर्थ यदि पूजा है तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत नहीं की जाती।'' इन तीन में से 'वन्दे मातरम्' के अर्थ पहले दो हैं, तीसरा नहीं अर्थात् भारतमाता को सम्मान, प्रणाम और प्राणदान।

भारतीय सेना, पुलिस, प्रशासन, शिक्षा–चिकित्सा आदि विभाग और व्यापार में हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय कार्य करते हैं। सैनिक के रूप में वीरगति का पल आने पर हिन्दू की भाँति मुस्लिम सैनिक भी प्राण न्योछावर करते हैं। यही 'वन्दे मातरम्' का आचरण है। पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दू की भाँति मुस्लिम कर्मी भी मौत के साये में कर्त्तव्य का पालन करते हैं। यही 'वन्दे मातरम्' का आचरण है। एक न्यायाधीश, प्रशासक, शिक्षक, चिकित्सक, वकील, कृषक, उद्योगी, व्यापारी, श्रमिक, अनुसेवक या सफाई कर्मचारी के रूप में, हिन्दुओं की भाँति मुस्लिम व्यक्ति भी राष्ट्रोन्नति के लिए तिल–तिल जलते हैं। यही 'वन्दे मातरम्' का आचरण है।

'वन्दे मातरम्' उद्घोष के दो भाग हैं–उच्चारण और आचरण। भारतवर्ष में चारों श्रेणियों के लोग मिलते हैं–(1) जो न उच्चारण करते हैं न आचरण; (2) उच्चारण करते हैं किंतु आचरण नहीं; (3) उच्चारण और आचरण दोनों करते हैं; (4) आचरण करते हैं किंतु उच्चारण नहीं। वस्तुतः शब्दों के उच्चारण में लोग अपने–अपने शास्त्रों, भाषाओं एवं परम्पराओं का अनुसरण करते हैं। हमारे देश में अनेक शास्त्र, अनेक भाषाएँ और अनेक परम्पराएँ हैं। हमारे संविधान ने सदाचार की सीमा में रहते हुए इनके चुनाव की स्वतंत्रता प्रदान कर रखी है।

उच्चारण को 25 प्रतिशत और आचरण को 75 प्रतिशत भाग माना जा सकता है। मुस्लिम समाज 75 प्रतिशत भाग में अन्यों के समान है। शेष 25 प्रतिशत के लिए उससे प्रश्न करना उचित न होगा। वह बोले तो अर्थ के अनुसार पाप न होगा। वह न बोले तो संविधान के अनुसार अधर्म न होगा। दोनों अवस्थाओं में शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व अनिवार्य है। समाज एवं राष्ट्र की समृद्धि इसी से हुआ करती है।

6105, पतंजलि योगपीठ फेज–2
हरिद्वार–249405
मो. 9839181690

आर्य जगत् सम्बंधी घोषणा
(फार्म–4 नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन का स्थान	:	आर्य समाज बिल्डिंग, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
2. प्रकाशन–अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	एस के शर्मा
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
4. मुद्रक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
5. प्रकाशक का नाम	:	एस के शर्मा
6. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
7. प्रकाशक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
8. सम्पादक का नाम	:	पूनम सूरी
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
उन सभी व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों–	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001

मैं एस के शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य है।

दिनांक 01–03–2018

एस के शर्मा
प्रकाशक

☞ पृष्ठ 02 का शेष

बोध कथाएँ...

करते समय उसकी ओर देखकर सूखी रोटी और बिना घी के सब्ज़ी खा लेता था।

एक व्यक्ति एक दिन किसी दूसरे कंजूस को मिला। दोनों अपनी–अपनी मितव्ययता का बात करने लगे। घी वाले ने कहा– "मैंने दो वर्ष पूर्व एक लोटा घी खरीदा था, अभी तक इसका बहुत बड़ा भाग ज्यों–का–त्यों है।"

दूसरे कंजूस ने कहा– "तुम इसका प्रयोग कैसे करते हो?"

पहला बोला– "भोजन करते समय उसकी ओर देख लेता हूँ। उसकी गंध सूँघ लेता हूँ।"

दूसरे ने कहा– "बहुत अपव्ययी हो तुम। अरे! घी को रोटी के ऊपर भले ही मत लगाओ, हवा लगने से वह कम तो होता है! उसका रस तो सूखता है! हमारे घर में साठ वर्ष पूर्व का एक पंखा है। मेरे दादा ने इसे खरीदा था। सारा घर इसका प्रयोग करता है। अभी तक वह ज्यों–का–त्यों है। बिल्कुल ऐसा, जैसे साठ वर्ष पूर्व था।"

पहले ने कहा– "यह कैसे हो सकता है? तुम सब लोग साठ वर्ष से इसका प्रयोग कर रहे हो तो कुछ–न–कुछ तो वह घिसा होगा?"

दूसरे ने उत्तर दिया– तुमने सबको अपने–जैसा मूर्ख समझ लिया है? अरे! प्रयोग करने की विधि तो पूछ। हमने पंखे को एक सन्दूक में बन्द कर रखा है। सन्दूक में ताला लगा है। हमारे घर में जिस व्यक्ति को गर्मी लगती है वह उठता है, सन्दूक के गिर्द चक्कर लगा लेता है। समझ लेता है कि हवा आ गई।"

एक तीसरा व्यक्ति भी वहाँ खड़ा था। वह बोला– "तुम इसे मितव्ययता कहते हो? अरे! सन्दूक के गिर्द बार–बार चलोगे, तो फ़र्श कितना घिस जायेगा?"

दूसरे ने पूछा– "फिर क्या करें?"

तीसरे ने कहा– "जैसा हम करते हैं। हमारे पास भी एक पंखा रखा है सन्दूक में। सन्दूक पर ताला है। घर में जिसको गर्मी लगे, वह सन्दूक के पास जाकर, एक स्थान पर खड़ा होकर दायें–बायें हिलता है। उसे हवा आ जाती है।"

एक चौथा कंजूस भी था। वह बोला– "तुम सब अपव्ययी हो। हमने पंखा कभी खरीदा ही नहीं। जब गर्मी लगती है, सड़क के परली ओर एक मकान का पंखा देख लेते हैं। इसी से तसल्ली हो जाती है।"

देखो, ऐसी मितव्ययता की बात मैं नहीं कहता। यह तो धन पर साँप बनकर बैठ जाना है। न स्वयं खाए, न दूसरे का खाने दे। धन का खर्च करो अवश्य, परन्तु उचित व्यय करो। जितनी चादर हो, उससे तनिक कम पाँव फैलाओ, जिससे कुछ बचा भी सको। बचाकर रखोगे, तभी तो दान करोगे।

कबीरा गरब न कीजिये

एक बहुत साधारण, बहुत निर्धन–सा व्यक्ति था। साधारण पढ़ा–लिखा भी था, परन्तु निर्धन था। नौकरी की तलाश में बम्बई पहुँचा। और तो कोई नौकरी मिली नहीं, एक सेठ जी के यहाँ झाड़ू देने पर नौकर हो गया। प्रतिदिन प्रातःकाल आता, लम्बी–चौड़ी दुकान में झाड़ू देता। दिन में कई बार सफ़ाई करता और जब भी खाली समय मिलता, कोई–न–कोई किताब लेकर बैठ जाता। पढ़ता भी, लिखता भी। उसका लेख बहुत सुथरा था। सेठ ने एक दिन देखा; बोले– "अरे, तू लिखना जानता है?"

वह बोला– "जी, थोड़ा–बहुत लिख लेता हूँ।"

सेठजी ने उसे चिट्ठियाँ लिखने पर लगा दिया। अब वह खूब परिश्रम से खूब बना–सँवारकर चिट्ठियाँ लिखने लगा। उसके लिखने का, विषय को प्रस्तुत करने का ढंग सुन्दर था। चिट्ठी में हिसाब–किताब की बात आती, तो उसे भी वह खूब अच्छी प्रकार समझा बुझाकर लिखता।

सेठजी ने एक दिन ऐसा ही पत्र देखा; बोले– "अरे, तू हिसाब–किताब भी जानता है?"

वह बोला– "जी, थोड़ा–बहुत जानता हूँ।"

सेठजी ने उसे मुनीम बना दिया। फिर उसके कार्य से प्रसन्न होकर हैड–मुनीम बना दिया। अब दूसरे मुनीम जलने लगे।

जलने का यह गुण बहुत है हमारे अन्दर। किसी दूसरे व्यक्ति ने तीन–मंज़िला मकान बना लिया तो हम उसे देख–देखकर दिन–रात जलते रहते हैं, बिना आग के जलते रहते हैं। ये मुनीम भी जलने लगे। दूसरी तो कोई बात उन्हें सूझी नहीं, सोचा– सेठजी के कान भरेंगे, इसकी निन्दा करेंगे, तो नये मुनीम की पदवी छिन जायेगी; परन्तु निन्दा करने की कोई बात नहीं मिली। वह सेठ के मकान में रहता था– दो कमरों में। एक कमरा खुला रहता था, एक बन्द। प्रतिदिन जाने से पूर्व वह इस बन्द कमरे में जाता, फिर थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता। ताला बन्द करके ताली जेब में रखकर दुकान पर पहुँच जाता और प्रातः से रात्रि तक अपना काम करता रहता।

जलने वालों को ऐसी बात मिली नहीं, जिसे वे सेठजी से कहें। तभी किसी ने उसे दुकान पर आने से पूर्व इस बन्द कमरे में जाता देखा। सन्देह हुआ कि इस कमरे में क्यों जाता है? इसको बन्द क्यों रखता है?

बस, सेठजी के कान भरे जाने लगे– "यह हैड–मुनीम बेईमान है, यह रुपया खा जाता है। हिसाब में गड़बड़ करता है और यह सेठजी का दिवाला निकाल देगा।"

सेठजी ने सुना तो कहा– "मैं इस प्रकार मानूँगा नहीं। मुझे पता है कि वह बहुत ईमानदार है। तुम लोग क्यों ईर्ष्या के कारण ऐसा कहते हो?"

एक दिन वह बड़ा मुनीम उसी बन्द कमरे में गया; अंदर पहुँचकर उसने द्वार बन्द कर लिया। दूसरे लोगों ने देखा तो दौड़े हुए सेठजी के पास पहुँचे; बोले– "चलो सेठजी! चोर पकड़ा गया। वह बेईमान मुनीम इस समय अपने चुराये हुए रुपयों को गिन रहा है। इस समय चलिये, वह रुपयों के साथ पकड़ा जायेगा।"

सेठजी तेज़ी के साथ पहुँचे। देखा, सचमुच कमरे का द्वार अन्दर से बन्द है। गर्जकर बोले– "कौन है अन्दर? दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने आवाज़ दी– "मैं हूँ महाराज!"

दूसरे लोगों ने जलती आवाज़ में कहा– "देखिये, हम न कहते थे!"

सेठजी ने क्रुद्ध होकर कहा– "अन्दर क्या कर रहे हो? दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने उत्तर दिया– "जी, विशेष काम तो नहीं कर रहा।"

सेठजी गर्जे– "फिर दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने कहा– "अच्छा अन्नदाता! बस, थोड़ी देर ठहरिये, खोल दूँगा दरवाज़ा।"

सेठ चिल्लाए– "अभी, इसी समय खोलो, नहीं तो हम दरवाज़ा तोड़ देंगे।"

बड़े मुनीम ने अन्दर से द्वार खोल दिया। सेठजी और दूसरे लोग कमरे में प्रविष्ट हुए। देखा कि वहाँ साधारण बक्स के अतिरिक्त कुछ नहीं है। सारा कमरा खाली है।

सेठजी ने कहा– "इस सन्दूक में क्या है?"

मुनीम जल्दी से सन्दूक पर बैठ गया। हाथ जोड़कर बोला– "अन्नदाता! यह मत पूछो। सन्दूक बन्द ही रहने दो।"

दूसरे लोगों ने कहा– "इसी में तो सब–कुछ है, इसीलिए खोलने नहीं देता।"

सेठजी ने कहा– "क्या है इसमें? खोलो, हम देखेंगे।"

मुनीमजी ने बैठे–बैठे कहा– "इसमें कुछ नहीं है महाराज! इसे न खुलवाइये। इसमें काम की कोई वस्तु नहीं है।"

सेठजी ने कहा– "हट आगे से, हम इसे देखेंगे अवश्य।"

मुनीम की आँखों में आँसू आ गये। धीरे–से उठा, एक ओर हो गया। सेठजी ने अपने हाथ से सन्दूक खोला। अन्दर देखा; आश्चर्य से पूछा– "अरे, यह क्या है?"

उसमें थी एक फटी धोती, एक मैला कुर्ता, एक पुराना टूटा हुआ जुता।

सब लोगों ने उन वस्तुओं को देखा। कोई भी इनका अर्थ नहीं समझ सका। बड़े मुनीम ने हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर भूमि की ओर देखते हुए कहा– "ये वे वस्त्र हैं, महाराज, जिन्हें पहनकर कई वर्ष पूर्व मैं इस नगर में आया था और आपकी सेवा में उपस्थित हुआ था। आपसे नौकरी देने की प्रार्थना की थी और आपने कृपा करके मुझे दुकान में झाड़ू देने की नौकरी दी थी। आपकी उस कृपा को मैं भूल न जाऊँ, अपनी वास्तविकता को मैं भूल न जाऊँ, मेरे हृदय में कभी अभिमान न जाग उठे, इसलिए प्रतिदिन प्रातःकाल दुकान पर जाने से पूर्व इन वस्त्रों को देखता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभो! मुझे अभिमान से बचा और मुझे शक्ति दे कि मैं अपने अन्नदाता की सेवा अधिक–से–अधिक परिश्रम और अधिक–से–अधिक ईमानदारी के साथ करूँ।"

सेठ जी ने जब यह बात सुनी तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। आगे बढ़कर उन्होंने मुनीमजी को अपनी छाती से लगा लिया; बोले, "धन्य हो मुनीमजी! तुम्हारी भाँति सब लोग करें, तो दुनिया से पाप का नाश हो जाए, क्योंकि अभिमान ही पाप का मूल है।

कबीरा गरब न कीजिए, ऊँचा देख अवास।
काल्ह परे भुई लेटना, ऊपर जमसी घास।।

संन्यास का अर्थ–सर्वत्याग

अजमेर नगरी से बाहर एक विशाल मैदान में 'ऋषि निर्वाण वाटिका' के निकट ही महर्षि स्वामी दयानन्द की निर्वाण–अर्धशताब्दी मनाई जा रही थी। त्याग और तप की मूर्ति महात्मा हंसराज भी एक कैम्प में विराजमान थे। वीतराग सच्चे संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के साधु–सन्तों के लिए पृथक् लङ्गर जारी किया हुआ था।

एक दिन उसी लंगर में मैं श्री स्वामी सर्वदानन्द जी की सेवा में बैठा था कि इतने में तीन–चार आर्य संन्यासी श्री स्वामीजी के पास पहुँचे और कहने लगे– "हम आपकी सेवा में निवेदन लेकर आये हैं।

श्री स्वामीजी ने पूछा– "क्या बात है?"

संन्यासी कहने लगे– "हमारी इच्छा यह है कि महात्मा हंसराज जी के पास जाकर साधु–मण्डली की ओर से यह प्रार्थना की जाए कि वे संन्यास धारण कर लें और इस कार्य के लिए आप भी हमारे साथ चलें।"

श्री सर्वदानन्द जी मुस्कराये और कहने लगे– "क्या महात्मा हंसराज जी ने संन्यास नहीं लिया हुआ है? सुनो! इनमें से कितने संन्यासियों से हंसराज जी बहुत अधिक संन्यासी हैं। उन्होंने केवल वस्त्र नहीं रंगे, अन्यथा उनका सारा जीवन ही संन्यास, त्याग और तप का जीवन रहा है। बाहर का चिह्न न हुआ तो क्या? उनके पास इस बात के लिए जाने का विचार छोड़ दो। मैं तो उनको अपने से अधिक संन्यासी समझता हूँ। मैं किस मुँह से उनके सामने संन्यास का प्रस्ताव रखूँ?"

यह सुनकर वे महानुभाव चले गये।

आज जो सच्चे संन्यासियों की ओर से भी जनता उपराम होती चली जा रही है, इसका सबसे बड़ा कारण है कि गेरुवे वस्त्रों में बहुधा अब वैराग्य और तप दिखाई नहीं देता, जो पूर्व–काल में था। संन्यास का अर्थ है– सर्वत्याग, और सर्वत्याग या पूर्ण वैराग्य के बिना मुक्ति का अधिकारी कोई नहीं बन सकता।

क्रमशः

☞ पृष्ठ 04 का शेष

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु...

इनसे प्रार्थना करने का लाभ–उपासना के लिए परमात्मा के निकट बैठने की योग्यता पात्र करना पूरा हो जाएगा।

श्रद्धेय वेद मर्मज्ञ वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, आर्यसमाज, सरिता विहार नई दिल्ली के वेद प्रचार कार्यक्रम में आमंत्रित थे। संयोगवश मैं भी सरिता विहार में अपने कनिष्ठ भ्राता श्री लव जी से मिलने गया हुआ था। अचानक भेंट होने पर दोनों ही प्रसन्न थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि यदि पूर्व निर्धारित कोई विषय न हो तो आप शिवसंकल्प मन्त्रों पर बोलिए।

श्रोत्रिय जी ने अत्यन्त स्निग्धभाव, भाषा में मेरा परिचय देते हुए प्रवचन प्रारम्भ किया। प्रवचन शिवसंकल्प मंत्रों पर ही था। इन मन्त्रों की अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की। तीन दिन के आयोजन में वह दो मंत्र ही पूरा कर सके। इतनी विशद व्याख्या थी कि उस तक जाने की योग्यता इस जीवन में कर पाना संभव नहीं है।

अभी तो मैं, इन छैः मन्त्रों का सत्यार्थ–प्रकाश के सप्तम सम्मुलास में उपलब्ध महर्षि दयानन्द कृत भाषार्थ/भावार्थ का संक्षेप में विवरण देना चाहता हूँ।

यजुर्वेद अध्याय 34 के ये छैः मन्त्र महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की 'प्रार्थना' करने के लिए संग्रहीत किए हैं। स्तुति प्रार्थना और उपासना के आठ मंत्रों का नियोजन पृथक रूप में करने का यही समुचित कारण हो सकता है कि इन्हीं मंत्रों को स्मरण कर, समझ कर व्यक्ति, इतना ही कर ले वही बहुत है। भगवद्भक्ति के लिए भक्तों को समय का बड़ा अभाव रहता है ऋषि को यह भलीभाँति ज्ञान था।

विश्वानि देव–मन्त्र से दुरितानि–दुर्गण, दुर्व्यसन और दुःख जुहुराणम् से कुटिलतायुक्त कर्मों से मुक्ति की प्रार्थना की गई है। इस तरह मन के निर्मल होने पर महर्षि 'मन' को सँभालते है।

कर्ता–धर्ता तो यह मन ही है। अगर यह मन स्वभावतः निर्मल होता तो परमात्मा इन मन्त्रों को वेदज्ञान में सम्मिलित ही नहीं करता। परमात्मा स्वभाव से अनादि है और जीवात्मा 'प्रवाह' से। आत्मा तो अनादि है पर जीवात्मा नहीं। जन्म–मरण के चक्र में निरन्तर पड़ा रहने के कारण उसे प्रवाह से अनादि निरूपित किया गया है। जब जीवात्मा–शरीर का चोला छोड़कर मोक्ष पद प्राप्त करता है तब ही वह अपने शुद्ध चैतन्यस्वरूप 'आत्मा' में होता है। महर्षि अल्पज्ञ आत्मा के लिए मोक्षानन्द स्थायीरूप में नहीं मानते। इसीलिए महर्षि मानते हैं कि मोक्षानन्द प्राप्त करने के पश्चात् आत्मा को पुर्नजन्म शरीर धारण करा देता है। ऐसी ही मोक्षानन्द से लौटी हुई आत्माएँ ही जन–जन के जीवन में अपने अनुपम, अनूठे कार्यों से युग–युगों तक चिरस्थायी स्थान बना लेती हैं। महर्षि दयानन्द ऐसी ही आत्मा योगेश्वर कृष्ण की मानते हैं। मोक्षानन्द की अवधि 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष मानते हैं। जरा इसे शून्यों में फैला कर तो देखिए– 31,10,40,00,00,00,000।

प्रवाह से अनादि जीवात्मा स्वतंत्र सत्ता होने के कारण कर्म करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। अच्छे या बुरे, या दोनों ही। शास्त्र की भाषा में श्रेयमार्ग या प्रेयमार्ग का निर्वाचन करने और पथगामी होने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र। श्रेयमार्ग का पथिक शान्त इसमें आनन्द मग्न रहता है और प्रेयमार्ग का पथिक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि व्याधियों से ग्रसित शृंगार रस में डूबा रहता है। एक को परमात्मा के सानिध्य का मोक्षानन्द और दूसरे को जन्म–मरण का चक्कर मिलता है।

पाप–कर्मों में एक कल्पनातीत आकर्षण खिंचाव रहता है। एक बार पाप–पंक में गिरा हुआ प्राणी, निरन्तर उसमें डूबता गहराई तक डूबता रहता है। स्वर्णपात्र से ढ़का हुआ प्रत्येक पात्र, पूरा सोना नहीं होता है। प्रेममार्ग में उपस्थित मायावी जाल को रेखांकित करने के लिए एक आख्यान प्रस्तुत करता हूँ।

सांसारिक सुखों की प्राप्ति के प्रयत्न/कर्म, मनुष्यों को इन्हीं कर्मों में उलझाए रखते हैं। सुखों की प्राप्ति की लालसा कभी संतुष्ट नहीं होती। प्यास बढ़ती जाती है।

एक ब्राह्मण देवता ज्ञान की देवी सरस्वती का भक्त था। दिन रात तपस्यारत रहने के कारण कुछ काल पश्चात् सरस्वती प्रकट हुई।

भक्त! क्या कामना है?

माँ! आपका आशीर्वाद चाहिए।

तथास्तु कह कर देवी अन्तर्धान हो गई।

ब्राह्मण देवता के पांडित्य की दुंदुभी बज गई। कथावाचन प्रवचन के निमंत्रण नियतरूप से मिलने लगे। पर रहा झाड़–फूँस का घर धर्मपरायणा पत्नी के पास चन्द साड़ियां और स्वयं के पास भी इतने ही वस्त्र। खाना–पीना ठीक–ठाक होने लगा था। अनुगामिनी पत्नी ने सुख–सुविधाओं की कमी का रोनी नहीं रोया, अभावग्रस्त होने पर भी अन्य स्त्रियों के सौभाग्य से ईर्ष्या नहीं की। देवता तो ब्राह्मण वृत्ति के ही थे। आराम से जीवनयापन हो रहा था। ऐसा ही होता रहता।

स्वयं के सुख में तल्लीन ब्राह्मण देवता को अचानक माँ सरस्वती का स्मरण हो आया। पुकार उठे–माँ! देवी सरस्वती प्रकट हुई पूछा–

वत्स! क्या चाहिए?

कुछ नहीं। आपकी कृपा से सब आनन्द मंगल है।

कैसे याद किया?

आपकी बहुत याद आ रही थी। दर्शन करने का मन हुआ। बस।

माँ सरस्वती अन्तर्धान हो गई।

पंडित जी गहरी सोच में पड़ गए थे। माँ सरस्वती के साथ अन्य देवी, आभूषणों से नख से लेकर सिर तक सज्जित यौवन आभा से देदीप्यमान देहयष्टि गौरवपूर्ण, मुखमण्डल अत्यन्त भव्य बड़े–बड़े मदमाते नयनों में तीव्र आकर्षण। पंडित जी अभिभूत। कुछ समय पश्चात् पुकार उठे–माँ! माँ! माँ!

देवी सरस्वती अविलम्ब प्रकट हुई। भक्त को बेहाल देख कर पूछा क्या बात है?

माँ! आप यह बताइए कि आज आपके साथ कौन देवी थी?

नहीं जानते?

नहीं।

धन की देवी लक्ष्मी थीं। क्यों क्या बात है?

पंडित जी मौन हो गए थे। देवी अन्तर्धान हो गई। गंभीर रूप में चिन्ताग्रस्त पंडित जी को अपना अभावग्रस्त जीवन घोरतम दारिद्र्य का विकटरूप में अनुभव हो गया। यह भी कोई जीवन है? संसार में चारों ओर जन, सुख–सुविधा जुटाने में जुटे हुए हैं। सब तरह का सुख भोग रहे हैं। और मैं छठे–चौमासे व्रत कथा का निमंत्रण पाकर, थोड़ी बहुत दान–दक्षिणा लेकर मग्न हूँ। धर्मपत्नी ने भी कभी कोई अभाव का इशारा भी नहीं किया। धिक्कार है ऐसे जीवन पर।

इतनी तपस्या से माँ सरस्वती प्रसन्न हुई है उतनी या थोड़ी और अधिक तपस्या से माँ लक्ष्मी को भी प्रसन्न किया जा सकता है।

पंडित जी माँ सरस्वती की आराधना छोड़ माँ लक्ष्मी देवी की आराधना में जी–जान से जुट गए। सब कुछ सुध–बुध भूल कर। भक्त पुकारे तो भगवान को आना ही पड़ता है। माँ लक्ष्मी देवी प्रकट हो गई।

क्या चाहिए?

आपका आशीर्वाद!

लक्ष्मी देवी ने एक पल सोच कर कहा–

तुम्हें कहीं देखा है?

पंडित जी ने स्मरण दिलाया कि एक बार जब आप माँ सरस्वती से मिलने गई थीं तब मैं उनकी सेवा में उपस्थित था। शायद आपने वहीं देखा होगा।

ठीक स्मरण दिलाया तुमने। अब बोलो मुझ से क्या चाहते हो?

कहा न माँ। आपका आशीर्वाद।

तुम सरस्वती के भक्त हो। वह विद्यावारूणि, अत्यन्त शांत गम्भीर स्वभाव की हैं। उनके सामीप्य में सुख ही सुख है। आनन्द ही आनन्द है। मनुष्य को इससे अधिक और क्या चाहिए जो तुम मेरे पास दौड़े हुए आए हो?

आशीर्वाद

मेरे आशीर्वाद में और सरस्वती के आशीर्वाद में मूलभूत अन्तर है। भक्त उससे सहज ही छुटकारा पा सकता है। उसके सामीप्य में मोह नहीं हैं। और मैं? रूपसी, चंचला हूँ पहले तो मैं किसी को अपने पास फटकने नहीं देती। यदि उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है तो उसे आजन्म अपने पास से मुक्त नहीं करती। न खुद चैन से रहती हूँ और न वहीं अपने भक्तों को चैन से रहने देती हूँ। सांसारिक भाषा में इसे निन्यावे का फेर कहा जाता है।

मां! आप टरकाइए नहीं। घोर दारिद्र्य का मुझे भान हो गया है। दारिद्र्य में भी सुख कहाँ? चैन कहाँ? शान्ति है लेकिन मरघटवाली शान्ति। ऐसी शान्ति मुझे नहीं चाहिए। विधाता ने यह चोला, मानव शरीर उसकी सृष्टि रचना का जी भर कर उपयोग करने के लिए दिया है। पहले उसका उपभोग तो कर लूँ। शान्ति–परमात्मा का आनन्दमय सामीप्य–मोक्ष की कामना बाद में करूँगा।

ब्राह्मण देवता अपनी याचना पर डटे रहे, अड़े रहे। तथास्तु कह कर लक्ष्मी देवी अन्तर्धान हो गई।

क्रमशः

22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर – 474001, म.प्र.

हम उत्तम बुद्धि व ज्ञान की वाणियों का सेवन करें

● डॉ. अशोक आर्य

मानव जीवन में प्राणायाम का विशेष महत्त्व है। इसलिए इसे पुरुदंसस कहा गया है। यह प्राणायाम ही हमें उत्तम बुद्धि देने वाला है, हमें उत्तम बुद्धि रूपी धन का भण्डारी बनाता है, इस धन से हमें सम्पन्न करता है। उत्तम बुद्धि का भण्डारी बनाकर प्राण ायाम के ही कारण ज्ञान की वाणियों अर्थात् वेद के आदेश का सेवन करने वाला यह हमें बनाता है। प्राणायाम के ही कारण हम ज्ञान की वाणियों का सेवन कर पाते हैं। इस बात का परिचय इस मन्त्र के स्वाध्याय से हमें इस प्रकार मिलता है:

अश्विना पुरूदंससा नरा श्वीरया धिया।
धिष्ण्या वनतं गिरः।। ऋग्वेद ।।

इस मन्त्र में चार बातों पर प्रकाश डाला गया है:–

प्राण अपान गतिशील रहें

मन्त्र कह रहा है कि हे प्राण तथा अपानों! आप हमारे पालक बनो। आप ही हमारे पूरक कर्मो को करने वाले बनो। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है। कि हमारे प्राण तथा अपान अर्थात् हम जिस श्वास के लेने व छोड़ने की क्रिया करते हैं, वह क्रिया ही हमारी पालक है, हमारा पालन करने वाली है, हमें जीवित रखने वाली है। हमारे जीवन को सुख पूर्वक चलाने वाली है। हम इस के आधार पर ही जीवित हैं। जब श्वास की यह क्रिया रुक जाती है तो हम जीवन से रहित होकर केवल मिट्टी के ढेले के समान बन जाते हैं। गत मन्त्र में भी लगभग इस तथ्य पर ही प्रकाश डालते हुए कहा गया था कि हमारे प्राण व आपान क्रियाशील हैं। यह क्रिया ही मानव का ही नहीं अपितु प्रत्येक जीव का, प्रत्येक प्राणी का पालन करने वाली हों। भाव यह कि हमारे प्राण (श्वास लेने की क्रिया) तथा अपान (श्वास छोड़ने की क्रिया) निरन्तर चलती रहे, कार्यशील बनी रहे। हम जानते ही हैं कि यह प्राण अपान ही हमारे अन्दर जीवनीय शक्ति भरते हैं। इसके बिना हम एक पल भी जीवित नहीं रह सकते। इसके बिना हम क्रियाहीन होकर मृतक कहलाते हैं।

गतिमान व क्रियाशील बनें

इस प्रकार हमारे शरीर में प्राण व अपान क्रियाशील रहते हैं तो हम भी जीवित कहलाते हैं, क्रियाशील रहते हुए अपने जीवन को निरन्तर आगे ले जाने का यत्न करते हैं। अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ पाने का यत्न करते हैं। सदा उन्नति के पथ पर ही अग्रसर रहने का प्रयास करते रहते हैं। यदि प्राण अपान हमारे शरीर में गतिमान नहीं होते तो हम क्रियाविहीन हो जाते हैं, जिसे मृतक की संज्ञा दी जाती है। इस लिए मन्त्र जो दूसरी बात हमें समझाने का यत्न कर रहा है, वह है कि हमारे प्राण व अपान इस प्रकार सदा कर्म शील रहते हुए हमें आगे ले जाने वाले बनें तथा हमारी उन्नति का कारण बनें। स्पष्ट है कि हम जीवन में जो कुछ भी पाते हैं, यहाँ तक कि उस प्रभु का जो स्मरण भी हम करते हैं तो वह भी प्राण और अपान के ही कारण ही लेते हैं। इसलिए हम पिता को प्रार्थना करते हैं कि हे पिता! हमारे प्राण व अपान को सदा गतिमान, सदा क्रियाशील बनाए रखें।

स्वाध्याय द्वारा सोम कण सुरक्षित करें

मन्त्र के तृतीय भाग में कहा गया है कि जब शरीर में प्राण व अपान गतिमान होते हैं तो हम भी गतिमान होते हैं, क्रियाशील होते हैं। क्रियाशील होने के कारण ही हम में स्वाध्याय की शक्ति आती है। स्वाध्याय कर ही हम वह शक्ति पा सकते हैं, जिसमें जीवन है। जिसमें जीवन ही नहीं है, मात्र एक मृतक शरीवत, लाश मात्र है वह क्या कुछ करेगा, वह तो क्रियाविहीन होता है। इस कारण किसी भी क्रिया को करने की उससे कल्पना भी नहीं की जाती। इस लिए शरीर में प्राण व अपान का निरन्तर चलते रहना आवश्यक है। जब प्राण व अपान क्रियाशील शरीर ही कुछ करने की क्षमता रखता है। एसे शरीर में ही स्वाध्याय की शक्ति होती है तथा हम स्वाध्याय के माध्यम से अनेक प्रकार के ज्ञान का भण्डार ग्रहण करने के लिए सशक्त होते हैं। इस तथ्य पर ही मन्त्र के इस भाग मे उपदेश किया गया है कि यह हमारे प्राण तथा अपान हमें उत्तम बुद्धि देने वाले हों। जब हम प्राण तथा अपान को संचालित करते हैं तो इस की साधना से हमारे शरीर में सोमकण सुरक्षित होते हैं तथा बुद्धि को यह कण तीव्र करने का कारण बनते हैं।

हमारी बुद्धि तीव्र हो

मन्त्र कहता है कि प्राण व अपान के सुसंचालन से हमारे शरीर में बुद्धि को तीव्र करने वाले जो सोम कण पैदा होते हैं, उनसे हमारी बुद्धि तीव्र होती है। यह तीव्र बुद्धि ही होती है जो मानव को कभी कुण्ठित नहीं होने देती। जिस प्रकार कुण्ठित तलवार से किसी को काटा नहीं जा सकता, कुण्ठित चाकू से सब्जी को भी ठीक से काटा नहीं जा सकता, ठीक इस प्रकार ही कुण्ठित बुद्धि से उत्तम ज्ञान भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस प्रकार ही जिन की बुद्धि कुण्ठित नहीं होती, जिन की बुद्धि तीव्र होती है, वह बुद्धि से हम ज्ञान की वाणियों का अर्थात् वेद के मन्त्रों का सेवन करें, इन का स्वाध्याय करें, इनका चिन्तन करें, इनका मनन करें, इनको अपने जीवन में धारण करें।

मन्त्र का भाव है कि हम अपने जीवन में प्राणायाम के द्वारा प्राण साधना करें। इस प्राण साधना से ही हम तीव्र बुद्धि वाले बनें। तीव्र बुद्धि वाले बन कर हम अपनी इस बुद्धि से ज्ञान की वाणियों के समीप बैठ कर इनकी उपासना करें भाव यह कि हम वेद का स्वाध्याय करें। हम बुद्धि को व्यर्थ के विचारों में प्रयोग न कर इसे निर्माणात्मक कार्यों मे लगाएँ।

पॉकेट–1, प्लॉट–61 रामप्रस्थ ग्रीन सै.–7
वैशाली गाजियाबाद उ.प्र
चलभाष–09718528068

निराला वेद प्रचारक– पं0 नन्दलाल निर्भय

● जगदीश चन्द आर्य

महाभारत काल के पश्चात् योगीराज श्री कृष्ण चंद्र के समान त्यागी तपस्वी ईश्वर भक्त धर्मात्मा समाज सुधारक जीव मात्र के हित चिन्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजरात के टंकारा ग्राम में श्री कर्षन जी तिवारी के घर माता यशोदा बाई की कोख से सन् 1824 में जन्म लिया था तथा संसार को ''वेदों की ओर लौटो'' का संदेश देते हुए आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में की थी। महर्षि दयानन्द के शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द, पं0 लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंस राज, लाला लाजपतराय, आदि हजारों महानुभावों ने वेद प्रचार समाज सुधार आदि शुभ कर्मो में अपना तन, मन, धन और लगा दिया था। उसी पावन वैदिक सभ्यता–संस्कृति के प्रचार प्रसार में पं0 नन्दलाल निर्भय ने अपना जीवन लगाया हुआ है।

पं0 नन्दलाल निर्भय कविरत्न का जन्म 15 अगस्त सन् 1940 को ग्राम–बहीन, जिला–गुरुग्राम (पंजाब) में हुआ था। इनके पिता जी पं0 घांसी राम गौड अध्यापक थे। वे तीन वर्ष शिक्षण कार्य करने के पश्चात सरकारी सेवा से त्याग पत्र देकर स्वतंत्रता संग्राम में सम्मलित हो गए थे तथा इनकी माता जी श्रीमती चमेली देवी भी सक्रिय रुप से अपने पति देव का साथ देते हुए, आजादी की लडाई में शामिल हो गई थीं। माता–पिता का प्रभाव पं0 नन्दलाल निर्भय के जीवन पर भी पड़े बिना न रह सका।

पं0 नन्दलाल निर्भय ने मैट्रिक की परीक्षा जाट हाई स्कूल, होडल तत्कालीन गुरुग्राम (पंजाब) जो इस समय हरियाणा में है। इण्डरमीडिएट कोसी कलाँ (उत्तर प्रदेश) से उत्तीर्ण की उसके पश्चात प्रभाकर व सिद्धांताचार्य की परीक्षाएँ हरियाणा व राजस्थान से पास कीं।

इनके पिता जी वैदिक धर्म के दिवाने थे जो कविताएँ, भजन भी लिखते थे तथा वे अच्छे संगीतकार भी थे। उनका प्रभाव पं0 नन्दलाल जी निर्भय के जीवन पर भी ज्यों की त्यों पडे बिना न रह सका। ये विद्यार्थी जीवन में ही कविताएँ लिखने लगे थे। किसी भी विषय पर बेहिचक व निडरता से अपने विचार रखना पं0 नन्दलाल जी की विशेषता थी इसीलिए इनके गुरुओं ने इनको निर्भय की उपाधि प्रदान की थी। अब सब इन्हें निर्भय जी कहते हैं। इनके पिता जी ने हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, शुद्धि आन्दोलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया था। अपने पिताजी की तरह पं0 नन्दलाल निर्भय ने गौ रक्षा आन्दोलन, शराब बंदी आन्दोलन तथा हरियाणा बचाओ आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर जेल यात्रा की थी।

पं0 नन्दलाल निर्भय जी उच्च कोटि के कवि, लेखक, इतिहासकार, भजनोपदेशक हैं। ये ओजस्वी वक्ता व समाज सेवी हैं। इन्होंने अब तक हजारों गरीब विधवा, अनाथ, वृद्धों व विकलाँगो को समाज कल्याण विभाग हरियाणा से पेंशन आदि की अर्थिक सहायता दिलाई है। मेवात (मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र) में विशेष रुप से वेद प्रचार कार्य करके हजारों गऊओं की प्राण रक्षा की है लगभग दो दर्जन हिन्दु औरतों व बच्चों को मुसलमानों के चंगुल से निकलवाकर धर्म रक्षा की है। ये निरन्तर गरीबों की मदद करते रहते हैं। इनका एक पुत्र इन्द्रदेव भी धर्म रक्षा में सन् 1999 में विधर्मियों द्वारा शहीद कर दिया गया था। पंडित जी पर भी कई वार आक्रमण हो चुका है।

पंडित जी के लेख व कविताएँ आर्य जगत की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं जिन्हें संसार के नर–नारी बड़े चाव से पढ़ते हैं। ये अब तक लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिख चुके हैं, जिनमें प्रचुर मात्रा में ज्ञान बर्धक एवम् जीवन निर्माण की सामग्री है। इनके भजनों को प्रायः आर्यसमाज व अन्य धार्मिक विचार धारा के व्यक्ति भी बड़े शौक से गाते हैं।

पंडित जी प्रौढ़ अवस्था में भी जवानों की तरह धर्म रक्षा के कार्यों में जुटे रहते हैं। अंत में, मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ...

''हे जगत पिता! हे जगदीश्वर। सुन लो मेरी विनती प्रभुवर।

दो शतायु जीवन इनको तुम शुभ कर्म करें ये जीवन भर।।

ये पंडित लेखराम बनकर जग में वैदिक प्रचार करें।

बन जाएँ स्वामी श्रद्धानन्द, निबलों विकलों के कष्ट हरें।।''

वैदिक प्रकाशन बहीन, पलवल (हरियाणा)

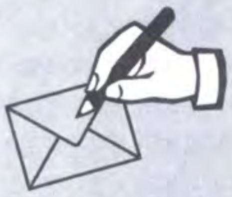

पत्र/कविता

कब मातम किया है?

हर डगर पर हमने दीपक ही जलाये
बढ़ते तूफानों का कब मातम किया है?
घुप अँधेरे में खुली थी आँख अपनी
विष भरे वातावरण में साँस ली थी
मार्ग के काँटों ने भी पग पग पे रोका
'औ' निशा काली धरोहर में मिली थी
किन्तु हम कब कण्टकों से रुक सके हैं?
कब हमारे धैर्य ने है हार मानी?
पत्थरों में भी खिलाये फूल हमने
विश्व में चाहे कोई मौसम रहा है।
बढ़ते तूफानों का कब मातम किया है।
काल ने हो क्रुद्ध ली अपनी परीक्षा
सत्य का सम्बल लिए बढ़ते रहे हम
अपने पौरुष से सदा तूफान मोड़े
आँधियों से भी सदा लड़ते रहे हम
घोर झंझावात से लोहा लिया है।
हो विजय नगरी कि पटियाले की धरती
आर्य जन के रक्त से रंजित हैं अब तक
शौर्य गाथाएँ निनादित आज भी हैं
जिनका स्वर ऊँचा, कभी मध्यम रहा है
हमने कब मातम किया है?
आज फिर पाखंड का है बोलबाला
सत्य है सहमा हुआ सा बेसहारा
वेद की मशअल लिए हम चल पड़े हैं
आओ जिसको साथ देना हो हमारा
वेद के आलोक से जग जगमगाए
आओ इस बढ़ते तमस से जूझ जाएँ
सत्य के साधक, कहाँ विश्राम तुमको
सत्य का पथ तो सदा दुर्गम रहा है
हमने कब.....मातम किया है?

आर्य रत्न प्रो. उत्तम चन्द शरर
अभिनन्दन ग्रन्थ से साभार

लहसुन

बूटी यह संजीवनी सुखद सुधारक खान–एक घूँट के पान से दे नवजीवन दान
दे नव जीवन दान तेज है मुख पर लाती–काया के सब रोग, जहर है दूर भगाती

आयुर्वैदिक मत–लहसुन में 5 रस होते हैं, भाव प्रकाश में लिखा है। जड़ में कटु रस, पत्ते में तिक्त रस, नाल में कष्य रस, नाल के अगले भाग में लवण रस और बीच में मधुर रस होता है। इसमें स्निग्ध, तीक्ष्ण, पिच्छिल, गुरु और सर पाँच गुण होते हैं। उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वात कफ् नाशक, रक्त पित्तवर्धक है नाड़ी उत्तेजक बुद्धिवर्धक एवं वृष्टि शक्ति वर्धक है। दीपन, पाचन अनुलोमन, शूल प्रशमन कृमि नाशक, यकृत उत्तेजक है। ह्रदय को उत्तेजना देना एवं शोधनाशक है। यह कफ् निस्सारक व कास श्वास स्वरभेद एवं यक्षमा कीटनाशक है। मूत्र जनन, शुक्र जनन, आर्तवर्जन है। कुष्ट ज्वरध्न एवं रसायन है। यह भग्न संघान कारक है। इसका लेप सूजन का दर्द, विष नष्ट करता है। भाव प्रकाश में रसोन सेवन करते समय मास अम्ल का सेवन हितकारक बताया है और व्यायाम अति क्रोध अंतिजलपान दूध व गुड़ का प्रयोग अहित कारक कहा है।

आधुनिक मत–लहसुन में एक उड़नशील तेल (डिस्टिलेशन) द्वारा प्राप्त होता है। जिसमें एलाइन और प्रोपाइल नामक गन्धक के तत्व होते हैं यह आमाशय के रस को बढ़ाकर पाचन में सहायता करता और उदाराध्यामान को मिटाता है। फुफ्फसी में जमें कफ् को निकालता है मासिक स्राव ठीक करता है यह बल कारक वायुनाशक, मूत्र तथा स्वेद ज्यादा लाता है।

बेहोश बालकों के नाक पर इसकी पोटली रखते हैं उदर कृमि मारता और शोध को मिटाता है विषैले जन्तुओं के द्वारा काटे गए स्थान पर इसका लेप करते हैं दाद पर लहसुन को रगड़ते हैं। इसे तेल में पका कर उस तेल की बूंद को कान के दर्द में डालते हैं। वाग्भट लहसुन की उपयोगिता को समझाते हुए कहते हैं–**विद्यति वायो न दुव्यलाशनाथ परम**–अर्थात् वायु रोग में लहसुन को छोड़कर और कोई औषधी नहीं है। लहसुन में वायु नाश करने की शक्ति है। **युनानी वैद्यक के अनुसार**–लहसुन दाहक–तीखा मूत्रल अध्यान हर, उदर बात हर विषध्न एवं कामोदीपक है। सृजन, पक्षाघात संधिवात, यकृत प्लीहावृद्धि एवं ह्रदय और फेफड़ों के रोगों में यह अकसीर है। यह जीर्णज्वर श्वेत कुष्ट आवाज को सुधारने वाला और दंत रोग को मिटाने वाला है।

वैज्ञानिक मत–लहसुन उष्ण लघुदीपन, उदरवात हर उत्तम कृत्रिध्न सवल उत्तेजक कफध्न प्रवल सड़न प्रतिकारक मूल वात हरे और बल्य है लहसुन में कैल्शियम, पोटेशियम और फास्फोरस, सध्श उत्तम खनिज तत्व विद्यमान हैं। इसमें आयोडीन और अलकली का अंश भी है। लहसुन में विटामिन बी.सी. तथा अल्प मात्रा में ए भी है। लहसुन का एलामल स्फाईड फेफड़ों का क्षय ग्रन्थीक्षय कंठ माल, अस्थि क्षय आदि पर अमृत के समान गुणकारी कार्य करता है। लहसुन क्षय के अणुओं में वृद्धि को रोकने वाला एक प्रबल जंतु नाशक द्रव्य है। प्रसुता के प्रयोग में भी हितकारी है। लहसुन मूत्रल है ह्रदय विकार में होने वाले सर्वांग शाप में हितकारी है।

इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध डॉ. एम.डब्ल्यू. मैंक डफ एवं डॉ. मिच ने केवल लहसुन के प्रयोग से ही अनेक क्षय रोगियों को अच्छा किया है। श्वास नली में होने वाली सड़न और कुक्कुर खाँसी में भी लहसुन प्रयोग के संतोषजनक परिणाम सामने आए हैं। लहसुन वैक्टिरिया पर सफलतापूर्वक काम करता है। लहसुन का एंटी सैप्टिक तत्व जंतुओं का नाश शरीर को संरक्षण देता है। लहसुन में अवस्थित एलामल सल्फाईड नामक द्रव्य त्वचा, फेफड़ों और वृक्कों के द्वारा बाहर आता है। लहसुन वात नाड़ियों पर प्रबल वह उत्तेजक असर होता है।

प्रयोग

1. लहसुन, हरा धनिया, अदरक, सफेद द्राक्ष, चीनी, सेंधा नमक की चटनी बनाकर खाने से अरुचि मिटती है आहार का पाचन होता है।
2. तीन माशा लहसुन को पीसकर उसमें तिल का तेल या घी मिलाकर प्रातः खाने से विषम ज्वर, वात, कफ् ज्वर सभी प्रकार की वात व्याधि दूर होती है।
3. लहसुन को पीसकर दूध में पीने से 'रक्तचाप' में बहुत लाभ होता है लहसुन ब्लड प्रेशर की रामबाण औषधी है।
4. लहसुन की कलिया आधा तोला गाय के घी में तलकर रोज भोजन से पूर्व खाने से आम वात मिटता है।
5. लहसुन और तुलसी का रस आधा–आधा तोला लेकर उसमें सौंठ का चूर्ण 2 माशा एवं काली मिर्च का चूर्ण 1 माशा, आधा सेर गौ दूध के साथ प्रतिदिन सायं–प्रातः पीने से जुकाम में आश्चर्यजनक लाभ होता है। सर्दी जुकाम में रामबाण औषध है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय अमरोहा, उ. प्र.

****

एस.एल. बावा डी.ए.वी. बटाला ने मनाया ऋषि बोधोत्सव

एस.एल. बावा डी.ए.वी. कॉलेज, बटाला में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। इस दिन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए प्रधानाचार्य ने कहा कि देश पर सर्वस्व त्याग करने वालों में स्वामी दयानन्द सरस्वती सर्वश्रेष्ठ थे। इन्होंने समाज में व्याप्त किसी एक–दो नहीं सभी बुराइयों को खत्म करने का प्रयास किया। जिस तरह स्वामी दयानन्द ने अपने भीतर शिव को जागृत करके समाज कल्याण के कार्य किए उसी तरह हमें भी स्वयं में शिव अर्थात् सत्य को जागृत करके कल्याण की भावना से देश सेवा में जुटना होगा।

हमारा बोध राष्ट्रहित में समर्पित हो, हमारा हर कर्म देश हित में लगा हो तथा प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो और सत्य मार्ग का अनुसरण करे। इस मौके पर समाज सुधारक श्री कुलदीप राज शर्मा ने शिवरात्रि एवं ऋषिबोधोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि जिन महापुरुषों के बलबूते पर आज समाज खड़ा है उन्हें हम वर्ष में कई मौकों पर याद करते हैं। परन्तु उनकी दी हुई शिक्षा तभी सार्थक होगी जब हम उस शिक्षा पर चलकर समाज को एकजुट करके कल्याण के कार्य करेंगे। कार्यक्रम के दौरान प्रो. सुनील जेतली ने मंच का संचालन किया। इस मौके पर कॉलेज के समूह शिक्षक तथा गैर–शिक्षक स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। इसी कार्यक्रम के दौरान श्री कुलदीप राज शर्मा को डी.ए.वी. संस्थाओं एवं आर्य समाज की सेवाओं के लिए सम्मनित किया गया।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी में वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि.नुआपड़ा ओड़िशा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव अनेक प्रेरक कार्यक्रमों के साथ गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य, उपाचार्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल के संरक्षक लेखवीर श्री खुशहालचन्द्र आर्य कोलकाता एवं श्री बसन्त कुमार पण्डा राज्य भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के शुभकरकमलों से ओ३म् ध्वजा उत्तोलन के साथ त्रिदिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ हुआ।

महोत्सवीय अवसर पर गुरुकुल में नवनिर्मित भवनों एवं चारदीवारी का लोकार्पण, लगभग सौ साधु–सन्तों का कम्बल एवं नगद राशि से सम्मान, विधवा, दिव्यांग, अनाथों को साड़ी, शॉल एवं कम्बल वितरण, तीन आदर्श गृहस्थी श्री पुरुषोत्तम आर्य, श्री नेहरू एवं श्री रत्नानन्द वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित एवं श्री धनन्जय बारला नैष्ठिक दीक्षा से दीक्षित, पूज्य विद्वानों के द्वारा राष्ट्रोन्नति एवं आध्यात्मिक विषयक प्रवचन, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा बौद्धिक एवं शारीरिक प्रतिभा प्रदर्शन जिसमें 23 ब्रह्मचारियों ने अष्टाध्यायी, धातुपाठ, लिंगानुशासन, उणादिकोष, पारिभाषिक, गणपाठ, निघण्टु, मीमांसा अतिरिक्त पांच दर्शन, छन्दःशास्त्र, काव्यालंकार, वर्णोच्चारण शिक्षा, आर्योद्देश्य रत्नमाला इन ऋषिकृत ग्रन्थों को आद्योपान्त सुनाया तथा नाटिका, गीतिका, नाट्य गीतिका, कव्वाली एवं विविध शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रमों ब्रह्मचारियों के द्वारा प्रदर्शन किया गया।

अष्टम वार्षिक महोत्सव की सबसे बड़ी उपलब्धि छः आदर्श परिवारों द्वार दैनिक अग्निहोत्र करने का संकल्प लेना रही। साथ ही ब्रह्मचारियों के द्वारा चाय पीने से हानि नाट्य गीतिका प्रस्तुति से प्रभावित होकर अनेक सज्जनों ने चाय एवं मादक पेय पदार्थ सेवन न करने का व्रत लिया एवं यज्ञोपवीत धारण किए।

सहारनपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान श्री रोशनलाल अरोड़ा रहे। यज्ञ वैदिक विद्वान सुरेन्द्र चौहान के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक भजनोपदेशक श्री रविकांत राणा तथा योगराज शर्मा ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वैदिक विदुषी श्रीमती रश्मि गर्ग ने शिवरात्रि पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को सच्चे शिव के आभास का सजीव चित्रण किया और कहा उनके मन में यह भाव आया जो शिव अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह अन्यों की रक्षा क्या करेगा। आर्य शिक्षा निकेतन के बच्चो ने कहा शिवरात्रि ऋषिवर की याद हमें दिलाती है, यह सच्चे शिव का जीवन में आभास हमें कराती है।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

एम.एल. खन्ना डी. ए. वी. ...

द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। एन.सी.सी. गर्ल्स कैडेट्स के मार्च पास्ट तथा विद्यालय के बैंड द्वारा गणमान्य अतिथियों को सलामी दी गई। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन ने गणमान्य अतिथियों का पौधों द्वारा स्वागत किया। सम्मानित अतिथि श्रीमती कमलजीत सहरावत ने अपने जोशीले भाषण में छात्रों को सभी के प्रति सम्मान की भावना रखने, अपने आस–पास स्वच्छता रखने तथा देश के प्रति सम्मान एवं इसके प्रहरियों के प्रति कृतज्ञता की भावना अपने मन में बसाने की प्रेरणा दी।

गणमान्य अतिथियों का स्वागत विद्यालय के क्वा यर द्वारा मधुर स्वागत गीत से हुआ। विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने देशभक्ति भरे गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किए। इन प्रस्तुतियों से सारा वातावरण देशभक्ति की भावना से भर गया।

परमवीर चक्र विजेता कैप्टन श्री बाना सिंह, मेजर जनरल जी.डी.बख्शी एवं अन्य भूतपूर्व सैनिकों को शाल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कैप्टन बाना सिंह ने अपने संबोधन में बड़ी ही सरलता एवं सहजता से अपनी मातृभूमि के प्रति किए गए कर्तव्यों का वर्णन किया तथा छात्रों को भी अपने कर्तव्यों को बड़ी ही निष्ठां एवं श्रद्धा से करने की प्रेरणा दी। विद्यालय के लिए स्मरणीय क्षण वह भी था जब मेजर जनरल जी.डी. बख्शी की पुस्तक 'द फॉल ऑफ डाका' का विमोचन किया गया जो कि 1971 के भारत पाक युद्ध के संस्मरणों पर आधारित है। मेजर बख्शी ने अपने शौर्य एवं वीरता भरे अनुभवों को विद्यार्थियों के साथ साझा किया। वेटरंस इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वी. के. मिश्रा ने भी अत्यंत प्रेरणादायक शब्दों से छात्रों को संबोधित किया व उन्हें सुरक्षा सेनाओं में भर्ती होकर राष्ट्र सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 14/15-03-2018

डी.ए.वी. सैक्टर 7, रोहिणी में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती के उपलक्ष्य में हुआ ग्यारह कुण्डीय यज्ञ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–7, रोहिणी, दिल्ली में हर्षोल्लासपूर्वक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 194वीं जयन्ती मनाई गई। इस सुअवसर पर विद्यालय के प्रांगण में ग्यारह कुंडीय यज्ञ एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में 1000 से भी अधिक विद्यार्थियों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ दी।

इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं डी.ए.वी. प्रकाशन विभाग के निदेशक श्री एस.के. शर्मा, विद्यालय की मैनेजर श्रीमती अनिता वडेरा, विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रिंसिपल तथा अभिभावकों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ एवं मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें बुराइयों का त्याग कर अच्छाइयों को अपनाने, संस्कारवान बनने एवं स्वामी जी के जीवन दर्शन को अपनाने पर बल दिया, साथ ही जीवन में सफल होने का आशीर्वाद दिया।

विद्यालय की प्रधाना राजबीर कौर ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों को स्वामी जी की शिक्षाओं को अपनाकर मानवता के मार्ग पर चलने का संदेश दिया तथा परीक्षाओं में सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें शुभकामनाएँ दी। इसके साथ ही प्रधानाचार्या ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं अभिभावकों का धन्यवाद किया। सभी अतिथियों ने पुष्प – वर्षा द्वारा विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल जीवन की शुभाशीर्वाद दिया।

अंत में शांति पाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. गुरुग्राम में ई-वेस्ट प्रबंधन पर अंतरविद्यालयी कार्यक्रम

'डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–49, गुरुग्राम' ने 'करो संभव असोसिएशन' तथा 'जुआना टेक्नोलाजी' के साथ मिलाकर ई–वेस्ट के प्रबंधन हेतु जागरुकता फैलाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

सर्वप्रथम विद्यालय के छात्रों ने ई–वेस्ट के उचित प्रबंधन हेतु इसे एकत्रित किया। तदुपरांत पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रारम्भ की गई इस योजना के अंतर्गत कई प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जैसे–माडल मेकिंग, इंडस्ट्रियल सिम्बोसिस, ग्रुप डिस्कशन (समूह चर्चा), पावर प्वाइंट प्रेज़ेन्टेशन, रेडियो शो, एस्से राइटिंग (निबंध लेखन), रैली, संकल्प, नुक्कड़ नाटक, फील्ड सर्वे आदि। इस आयोजन का लक्ष्य विद्यार्थियों तथा समाज में ई वेस्ट जैसे वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरुकता फैलाना है ताकि वे इस विषय के प्रति संवेदनशील हो सकें तथा अपनी धरती की सुंदरता बनाए रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें।

इसी योजना के अंतर्गत दिसंबर माह में एक अंतरविद्यालयी कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया, जिसमें गुरुग्राम के 13 विद्यालयों ने भाग लेते हुए ई–वेस्ट के प्रबंधन पर अपनी–अपनी प्रस्तुति प्रदर्शित की। कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी के स्वागत संबोधन द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने सभी विद्यार्थियों को एकजुट होकर अपने पर्यावरण की सुरक्षा करने हेतु एक सक्रिय पर्यावरण संरक्षक बनाने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने ई वेस्ट के द्वारा बनाए गए वाद्य यंत्रों से अद्‌भुत संगीत ध्वनि बजाई जिसे सुनकर सभी मंत्रमुग्ध रह गए। 'जुआना टेक्नोलाजी' की डायरेक्टर श्रीमती स्वाति गाँगुली और 'करो संभव' की मार्केटिंग एंड कम्युनिकेशन हेड श्रीमती स्मिता पोलाइट ने भी विद्यार्थियों को समाज कल्याण के लिए सदैव अग्रसर रहने की प्रेरणा दी। सभी विद्यालयों ने इस आयोजन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और अपनी उत्तम प्रस्तुतियों द्वारा पर्यावरण के प्रति अपनी संवेदनशीलता को प्रस्तुत किया जो कि इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का लक्ष्य है।

स्वच्छता अभियान सर्वेक्षण के तहत् डी.ए.वी. सोलापुर पुरस्कृत

सोलापुर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा स्वच्छता अभियान सर्वेक्षण 2018 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिता में डी.ए.वी. कॉलेज, सोलापुर (महा.) को जनरल चॅम्पियनशीप का पुरस्कार महाराष्ट्र के मराठी फिल्म इंडस्ट्री के मशहूर अभिनेता एवं सोलापुर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के ब्रेंड–ॲम्बसीडर (स्वच्छता दूत) श्री जितेन्द्र जोशी के करकमलों द्वारा प्राप्त हुआ। इस प्रतियोगिता में सोलापुर एरिया के कॉलेज सम्मिलित थे। प्रिन्सीपल डॉ विजय कुमार उबाले ने पुरस्कार स्वीकार किया। इस समय कॉलेज के छात्र एवं अध्यापक गण उपस्थित थे। सूखा कचरा व्यवस्थापन, घन कचरा व्यवस्थापन, सामाजिक प्रबोधन व जनजागृति, वक्तृत्व स्पर्धा, रंगोली, पोस्टर प्रदर्शनी, स्वच्छता अभियान का एप डाउनलोड, पथनाट्य, प्लॅस्टिक कचरा निर्मूलन, स्वच्छता के लिए शपथग्रहण, जैसे उपक्रम के स्तर पर डी.ए.वी. सोलापुर ने बढ़िया कार्य कर के दिखाया है, डी.ए.वी. सोलापुर के छात्रों ने शहर के इलाके में बगीचा, रेलवे स्टेशन, मंडी, बाजार, बस थाना जैसे सार्वजनिक जगह की स्वच्छता की। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत छात्रों ने रैली निकालकर पथ नाट्य द्वारा समाज प्रबोधन का कार्य किया। इस प्रकार विभिन्न उपकमों के उपलब्धियों के बल पर जनरल चॅम्पियनशिप हासिल हुई। इस स्वच्छता सर्वेक्षण तहत् उत्तम व श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रिन्सीपल डॉ विजयकुमार उबाले, अध्यापकगण एवं छात्रों ने कडी मेहनत की। इस कार्यक्रम में कॉलेज के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा आदरणीय स्थानीय सचिव श्री महेश चोपड़ा के मार्गदर्शनानुसार बनाई गयी। इस उपलब्धि के लिए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के अध्यक्ष आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने बधाई दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**